

अंक : जनवरी-मार्च, 2026

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लीक चेतना री राजस्थानी तिमाही



सम्पादक
श्याम महर्षि



प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित



साहित्य मण्डल, श्री नाथद्वारा कानी सूर्य मरुभूमि शोध संस्थान रा उपाध्यक्ष
अर साहित्यकार समालोचक डॉ. चेतन स्वामी ने श्री भगवती प्रसाद देवपुरा प्रेक्षागार में
'बृजकान्त साहित्य सम्मान-2026' अरपित करीज्यो ।



साहित्य मण्डल, श्री नाथद्वारा कानी सूर्य राजस्थली रा प्रबन्ध सम्पादक अर
साहित्यकार समालोचक श्री रवि पुरोहित ने श्री भगवती प्रसाद देवपुरा प्रेक्षागार में
'डॉ. के. आर. कल्याण रामन स्मृति सम्मान-2026' अरपित करीज्यो ।

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही
राजस्थली

जनवरी-मार्च, 2026

बरस : 49

अंक : 2

पूर्णांक : 170

संपादक
श्याम महर्षि



प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

संपादक-मंडल
डॉ. मदन सैनी
डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'
किरण राजपुरोहित 'नितिला'
मोनिका गौड़

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडुंगरगढ़ 331803)

www.rbhpsdungargarh.com
e-mail : rajasthalee@gmail.com

सैयोग राशि

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

राजस्थानी सारू 'सुप्रीम कोर्ट' रो अैतिहासिक फैसलो	रवि पुरोहित	3
---	-------------	---

कहाणी

नींद	चेतन स्वामी	5
म्हारा भाईजी	हरिमोहन सारस्वत 'रूख'	12
कोकिलकंठी	नीलम शर्मा	22

आलेख

राजस्थानी : लोक सूं लाइक ताई	हरीश बी. शर्मा	30
------------------------------	----------------	----

व्यंग्य

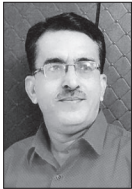
बिना टिगट जात्रा री सजा	दीनदयाल शर्मा	35
-------------------------	---------------	----

कविता

बुद्ध ! खुद सूं खुद रो जुद्ध / अमावस रो चांद		
पाणी रो पत / प्रीत परणीजै / पणघट री प्रीत		
प्रीत-सैनाण / प्रीत-संगीत	डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित	38
म्हारी कविता / ओळूं / कवितालेख		
आखर / बातां	योगेश राजस्थानी	41
ओ नारी / झाळ नारी री / म्हारी दुनिया	बबिता कुमावत	43

कूंत

ओळुवां को खाटो-मीठो संसार : ओळ्यूं की ओळ्यां	मंजू किशोर 'रश्मि'	45
--	--------------------	----



राजस्थानी सारू 'सुप्रीम कोर्ट' रो ऐतिहासिक फैसलो

आ सगळै राजस्थान रा रैवासियां सारू घणै हरख री बात है कै देस रो उच्चतम न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) राजस्थान री मातृभासा राजस्थानी नै राज्य री प्राथमिक अर उच्च माध्यमिक स्कूलां में साहित्य विषय रै रूप में पढावण रो फैसलो सुणावतां थकां जरूरी दिसा-निरदेस राजस्थान सरकार सारू जारी कऱ्या है, सागै ई इण सारू पूरी कार्ययोजना बणावण री पण ताकीद करीजी है। उच्चतम न्यायालय रै इण ऐतिहासिक फैसलै सूं राजस्थान रै साहित्य जगत रा बुद्धिजीवियां सागै आमजन में घणो हरख-आणंद देख्यो जा रैयो है, पण असल उछाव-उमाव तो इण निरदेस अर फैसलै नै राजस्थान री सरकार रै मानण अर उणनै क्रियान्वित करियां सूं ई होसी।

दरअसल, राजस्थानी भासा नै भारतीय संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़ण अर उणनै प्राथमिक शिक्षा में पढाई जावण री मांग बरसां सूं चाल रैयी है, जकी लारलै कीं बरसां में जोर ई पकड़्यो है। आं दिनां राजस्थान रा आरटीआई कार्यकर्ता अर अधिवक्ता ओ.पी. ओझा जी रा धरातळी प्रयास ई इण मुद्दै नै राजस्थान में खासी चरचा रो विसय बणाय दियो है। वरिष्ठ साहित्यकार अर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै राजस्थानी विभाग रा संस्थापक अध्यक्ष डॉ. कल्याणसिंह जी शेखावत अर जोधपुर सूं ई छपण वाली राजस्थानी री मासिक पारिवारिक पत्रिका 'माणक' रा संपादक पदम जी मेहता राजस्थानी री संवैधानिक मान्यता अर इणरै प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश सारू बरसां सूं आफळ कर रैया हा। छेवट उणां लारलै बरस 2025 में राजस्थानी भासा रै पख में केई तथ्यां रो हवालो देंवता थकां उच्चतम न्यायालय में अेक याचिका दायर करी, जिणमें राजस्थानी भासा नै प्राथमिक शिक्षा में शामिल करण रै सागै राजस्थान री प्रतियोगी परीक्षावां अर बी.एड., अेम.अेड. रै पाठ्यक्रम में ई इणनै शामिल करण री मांग करी ही।

लगैटगै डेढ बरस पछै सुप्रीम कोर्ट, पदम जी मेहता अर डॉ. कल्याणसिंह जी शेखावत री इण याचिका माथै संज्ञान लियो अर सगळा तथ्यां नै समझ्यां पछै 12 मई, 2026 रै दिन आपरो औ अतिहासिक फैसलो सुणावतां थकां राजस्थान सरकार नै जरूरी दिसा-निरदेस पण दिया। आपरै निरदेस में उच्चतम न्यायालय कैयो कै जद राजस्थान री उच्चतर शिक्षा में राजस्थानी साहित्य विषय पढाईज रैयो है तो प्राथमिक शिक्षा में इणनै लागू करण में कांई दिक्कत होय सकै है !

सुप्रीम कोर्ट रा वरिष्ठ अधिवक्ता मनीष जी सिंघवी अर वांरा सैयोगी अपूर्व जी सिंघवी इण केस री पैरवी जनगणना रा प्रामाणिक आंकड़ा समेत हर स्तर माथै राजस्थानी भासा री महत्ता नै दरसावतां थकां करी। इण याचिका माथै सुप्रीम कोर्ट रा वरिष्ठ न्यायाधीश विक्रमनाथ जी रै सागै न्यायाधीश संदीप जी मेहता री दो सदस्यीय पीठ विगतवार आपरो औ फैसलो सुणायो। इण अतिहासिक फैसलै सूं राजस्थान रा बी.अेड. कॉलेजां में ई प्रशिक्षण रै रूप में राजस्थानी भासा-साहित्य नै शामिल करणो जरूरी हुय जासी, क्यूकै प्राथमिक स्तर री स्कूलां में राजस्थानी नै शामिल करतां ई उण सारू प्रशिक्षित राजस्थानी शिक्षकां री जरूरत पड़ैला। हालांकि राजस्थान मूल रा हिंदी शिक्षकां नै राजस्थानी भासा पढावण में किणी भांत री दिक्कत नीं आवणी चाईजै, फेरू ई सैद्धांतिक रूप सूं औ जरूरी हुय जावैला। इणसूं राजस्थानी भासा नै औरू लूंठो संबळ मिलसी।

अबार री घड़ी राजस्थानी साहित्य विषय उच्च माध्यमिक स्तर रा स्कूलां में पढाईजै, पण वो भी वैकल्पिक विसय रै रूप में है। जटै तांई राजस्थानी साहित्य रो विसय अनिवार्य रूप सूं राजस्थान रा उच्च माध्यमिक विद्यालयां रै सागै प्राथमिक स्तर रा स्कूलां में नीं पढायो जासी, बटै तांई बात ढबसर नीं बैठै। अबार ई राजस्थान रा लगैटगै चार-पांच हजार उच्च माध्यमिक विद्यालयां मांय सूं नीठ सौ-डेढ़ सौ स्कूलां में राजस्थानी विसय रो अध्ययन होय रैयो है, जको 'ऊंठ रै मूंडै में जीरो' री कहावत नै चरितार्थ करै। अनिवार्य विसय रै रूप में राजस्थानी विसय जुड़्यां पछै राजस्थान रै प्राथमिक अर उच्च माध्यमिक स्कूलां रै कला-वर्ग रै हरेक विद्यार्थी नै राजस्थानी भासा अर उणरो साहित्य पढण सारू मिलसी। इणसूं नीं फगत राजस्थानी भासा नै संवैधानिक मान्यता दिरीजण रो पख मजबूत होसी बल्कै राजस्थानी में निकळण वाळी पत्र-पत्रिकावां रा पाठकां री संख्या ई मोकळी बधैला, जिणरो कै अबार साव तंगी-तोड़ो है।

राजस्थानी भासा रै पख में उच्चतम न्यायालय रै इण अतिहासिक फैसलै सारू माननीय वरिष्ठ न्यायाधीश विक्रमनाथ जी, न्यायाधीश संदीप जी मेहता रै सागै वरिष्ठ अधिवक्ता मनीष जी सिंघवी नै लखदाद अर इणां रो हियैतणो मोकळो आभार। भाईसाब पदम जी मेहता अर आदरजोग डॉ. कल्याणसिंह जी शेखावत तो बधाई रा पात्र है ईज। जै राजस्थान, जै राजस्थानी।

—रवि पुरोहित



चेतन स्वामी

नींद

घरवाळा तीन-चार बार उणनै संभाळ्या। उणरी बेहोसी जियांकली नींद टूट ई नीं रैयी ही। घरवाळी आपरै बेटै नै बता रैयी ही, “सिटकणा मिनख है, सदा ई चांदड़ा ज्यूं रैवै, आपरी जची करै, नींद नै बापड़ी नै के दोस है, कदैई तो आवै ई, आखी-आखी रात पैसाब रै भानै सूं लारीनै-आगीनै भूवता रैवै।”

“बैमला है।” छोरो कैय रैयो हो, “इत्ती उमर बैम अर फट्टूपणै में काढदी।”

“ना रे, इयांकली बात मत कऱ्या कर, फट्टू-वट्टू मत बोल्या कर, कीं तो फैम राख, आखिर तो थारा बाप है, तन्नै बोलण रो सफां ई सऊर कोनी।”

छोरै आपरी बात राखण खातर मिजळाई सूं ओजूं कैयो, “फट्टू ई तो है, इत्तो ई कोई मिनख डर-डर रै जीवै के...।”

“व्हा रैवण दे, बोल्या अर बोया, जा तूं बारै जा...।”

उण कीं ताळ आपरै सूतोडै मोट्यार रै मूंडै कानी जोयो—कदैई गोळ भरवां चेहरो हो, अबै तो दोवूं गालां में खाडा पड़ण सूं चरो लम्बोतरो-सो होयगयो। सिर रै चौफेर-चौफेर तो कीं छीदा-माड़ा झींटा है, पण बिचाळै तो आलड़ीर-सी निकळगी। उण सोच्यो—साठ-पैंसठ री औस्थ्या पार कऱ्यां, कियां कीं मिनख बेडोळा होय जावै। मूंडो पिचक्योड़ो है जिको तो है ई, बाकी री कसर तीन ठौड़ उग्योड़ा मोटा-मोटा मस्सां पूरी कर दी। दाढ़ी करती बगत कई बार कट न्यारा जावै। मरो रे, म्है ई काई सोच रैयी हूं, म्हारो चेहरो के सागण रैयो है, होठां उपरां मोट्यारां री-सी मूँछ्यां उगण लाग रैयी है। उण आपरै मोट्यार रो खुंवो अपडर थोड़ो-सो हलायो, “आज इयां के हुयग्यो, घड़ी कानी देखो, साढी नौ बज रैयी है, किताक सोयस्यो?” खुंवो हलावणै सूं बो

:: ठिकाणो ::
काळूबास, श्रीडूंगरगढ़
जिला-बीकानेर
(राजस्थान)
मो. 9461037562

बेगो-सो जाग'र बैठो होयगयो। जिकै पाटै माथै सौवै, उणसूं टांग्यां हेठै लटकाई अर हलावणी सरू कर दी। लारै किणी बेली कैयो हो कै, नींद सूं भचकै ऊभो होय'र व्हीर नीं होवणो चाईजै, दोय मिनट टांग्या नै हलाय'र खून रै दोरै नै सही करणो चाईजै। इणमें किस्सा पईसा खरच होवै। उण इयां करणो सरू कर दियो।

लुगाई उणनै जगाय'र रसोई में ढामा-टोपा करण नै गई परी ही। पईसै री बात उण सोची, इणरै सागै ई उणरै चेहरै माथै अेक मुळक उतर आई। आज जिको बो साढी नौ बजी ताई नचीतो सोय सक्यो, उणरै लारै पईसै री बात ई रैयी है। उण मौ-माखी आळै दाईं किरमी-किरमी कर'र पच्चीसेक लाख रुपिया जोड़ राख्या हा। आ रकम जोड़तां बीनै च्यार-पांच साल रो बगत लाग्यो। तीन दिन पैली बै पईसा सुक्यारथ में खरच होय'र निवड़ग्या, तो आज उणनै नचींती नींद आई। दोय दिन तो उणनै ब्याव रा काम सांवटतां, न्यारा-न्यारा कामवाळां नै चुकारो करण में ई लागग्या। कालै छैकड़लो तकादो कनोई रो सलटायो। कनोई नै सलटायां पछै बीं कनै कोई सताईस-अठाईस हजार रुपिया बच्या हा। जे कोई भूल्यो-चुक्यो तकादेदार आय जासी तो कोई चिंत्या कोनी। इयां सोच'र बो सुख सूं सोयो।

लेट्रीन घर नै शौचघर ठीक ई कैवै, उण सोच्यो। अठै मिनख सबसूं बेसी सोचै। उणनै आ सोचतां हंसी आयगी, कै पच्चीस लाख रिपियां नै रुखाळतां बीं रै फेफी आयगी, पण जिकां कनै पचासूं करोड़ रुपिया रैवै, बै काई करता होसी, बांनै तो काई नींद आवती होसी, भाई रे भाई, रुपियां नै रुखाळणो भोत दोरो काम है।

पांच साल पैली जद बो आपरै घर मांय ओ अैलाण कर दियो हो कै सुनीता री बेटी कृष्णा रो ब्यांव आपां करस्यां, तो घरवाळी अर बेटी दोवूं ई घणी राजी होई। दरअसल सुनीता बां री बडी बेटी है। जंवाई अेक, प्राइवेट स्कूल में स्टोर कीपर रो काम करै, पंदरै हजार रुपिया मिलै, बी सूं बां रै घर रो खरच ई दोरो-दोरो चालै, छोटा-मोटा सारा तो इण घर सूं देईजै। बो सदा ई बेटी नै दुखी देखतो तो उण आपरी दोहिती रै ब्यांव करण रो अैलाण कर जंवाई-बेटी दोवां नै ई नचींता कर दिया। इण अैलाण रै सागै ई बो गैराई सूं आपरै घर री माळी हालत कांनी सोच्यो। बो लारलै साल ई तो अेक प्राइवेट स्कूल सूं रिटायर होयो है। प्राइवेट स्कूल सूं रिटायर होयां पछै जिको मिल्या करै, बो बीनै भी मिल्यो। दो साफा, दो शॉल, दसेक माळावां, अेक प्रशस्तिपत्र अर कीं गिफ्ट। गुलाल लगाय'र बाजै सूं घर ताई पुगावणो, बस और काई होवै ?

रिटायरमेंट होयां बीनै लाग्यो कै बरस भलाई बै साठ गिट लिया, पण ओजू बूढो होवण जिसी कोई बात कोनी। बो अेक मोहिली दीठ आपरै डील माथै नाखी। भगवान री दया सूं उणरो डील ससवों है, सपोसो है। ओजू तो खासा काम कर्यो जा सकै। तनखा तो हुवा बंद होयगी, जिका तीस-पैंतीस हजार रुपिया थित बंध्या आय रैया हा, उणसूं उण रो घर मजै सूं चाल रैयो हो। अेक छोरो अर अेक छोरी रो ब्यांव टैमसर कर दियो, अेक

पोतो अर अेक पोती है। छेरो कई दिन ग्रेज्यूएशन करूयां पछै सरकारी नौकरी रा तड़फा तोड़्या, पण नीं लागी जणां अेक प्लाईवुड कंपनी में अेकाउंटेंट रो काम दो साल सूं संभाळ राख्यो है। बीनै भी बां जित्ती-सी तीसेक हजार रुपिया तिनखा मिलै, सागै बो लाखेक रुपियां नै शेयरां मांय भी रड़भड़वै। सावचेती राखै जणां पांच-दस हजार रुपिया आवता रैवै। सावधानी नीं राखै तो लाख दो लाख रिपिया शेयरां में लागतां तो बेसी टैम ई कोनी लागै। खैर, असल बात आ है कै आपरी खेंचै अर ओढै। रिटायरमेंट रै बाद अबै घर खरचै री गाडी बीं रै कांधां ऊपरां है। काठ-पीठ कर र घर चालै, चाल्यां जावै।

भलाई बेटो घर खरचो ओढ लियो, पण बो दोहिती रो ब्यांव ओट राख्यो है, जणां निचला बैठ्यां कियां सरसी, मास्टर रै माथै में आ बात रिटायरमेंट रै कीं दिना पछै ई घिरोळा खावण लागगी। बो सोच्यो अर केई बार सोच्यो कै अेक रिटायर मास्टर काई-काई धंधा कर सकै ? बो कई रिटायर मास्टरां माथै गैरी खोजी मीट नाखी। रूपजी लारलै साल रिटायर होया अर शाखा रै टाबरां नै प्रशिक्षित करण रै काम मांय लागग्या। अहमदजी बेंड में केशियो बजावण लागग्या, बियां भी बै संगीत टीचर हा। सुरेन्द्रजी हथायां में बैठ र बातां लसोड़ै, कोई नीं आवै बितै चौकी पर बैठ्या बीड़ी सुरड़ बोकरै। बो सोच्यो, आपां इसो के करां, जिकै सूं दोय पईसा आवत होवै अर टैम ई सोरो बीतै। दो पांच दिन तो बो सोच्यो ई सोच्यो, कोई बात घड़ बैठी कोनी। आप ई घड़तो अर ‘ऊंहूं’ कैय र आप ई मिटा नाखतो। दोहिती रै ब्याव रो ऐलाण बीनै बिकनो-सो कर रैयो हो। अबै कैयदी जिकी बात तो पूरी करणी ईज है। इण घड़ा-मढै बिचवै ई अेक दिन मदन गुरुजी बजार रै रस्तै मांय मिलग्या। मदन गुरुजी सरकारी मास्टर है अर बां रै रिटायरमेंट में ओजूं दोय साल घटै। बां रिटायरमेंट री बधाई दी अर कैयो, “और बताओ मास्टर जी, के चाल रैयो है ?”

बो हंस र बोल्यो, “चाल तो म्हें ईज रैयो हूं, बाकी तो कीं कोनी चालै।”

मदन गुरुजी उपरै मजाकिया उथळै सूं थोड़ा-सा झेंप्या अर सीरियस होवता-सा कैयो, “म्हारो मतळब अबै के विचार है ?”

“विचार तो मदनलालजी के है, पण सोचां, कोई रस्तै सूं दोय रुपिया कियां आवै। बिना पईसा कोई काम तो कर्यो कोनी जा सकै, प्राइवेट में काम करणियै रो क्यारो रिटायरमेंट, बीं नै तो अेक जग्यां सूं रिटायर होयां, कठैई दूजी जग्यां ठोसी खावणी पड़ै।”

मदन गुरुजी, धीरज सूं सुणी सगळी बात। बै हाथ झाल र बीनै सामलै पार्क में लेयग्या अर सीमेंट री एक बेंच पर बैठा र कैयो, “कई काम इयांलका है, जिका थूक बिलोयां ई होय जावै, कोई रकम कोनी खरचणी पड़ै।”

बो गताघम में पजग्यो। म्हाटो इस्यो के काम है जिकै में रकम लगायां बिना उपेजो होय जावै। बो बोल्यो, “भाई मदनजी, थे ई बतावो इस्यो किस्यो काम होवै। म्हारै तो खोपड़े में कीं आवै कोनी।”

बै सरगोसी रै अंदाज में कैयो, “प्रोपर्टी! प्रोपर्टी रो काम मास्टर जी। इणमें रुपियो धैली कीं कोनी लागै, फगत थूक ई बिलोवणो पड़ै, सामलै आदमी नै आंटाचित ल्याया अर दोय रुपियां रो जुगाड़ होय जावै।”

बो कीं रूआं-सो होयग्यो, “ना ओ मदनजी, इयां थूक बिलोयां सूं कुण प्रोपर्टी लेवै, बा तो कोई रै पीक होयां ई लेवै।”

“दलाल तो बो ई होवै, जिको बिना तिस पाणी पाय देवै। पीक तो बणावणी पड़ै। सामलै रै पांच परसेंट रूआं में होवै तो बीं नै सौ टक्का चाँकैसर लेय आवै, बीं नै ई दलाल कैवै।”

“अबै इण उमर में क्यांरो दलाल बणीजै।” मास्टर अेक ठंडो-सो निसखारो नाख, चालण सारू ऊभो होयो। चालतां नै मदनजी रोक्का कोनी, पण इत्तो जरूर कैयो, “आज सोंवती वेळ कीं ताळ सावळ सोच्या, कोई हींग फिटकड़ी कीं कोनी लागै, सामलै रै रूआं में ल्यावणी है।”

साचैई, बीं रात, बो ठाह नीं किती ताळ सोच्यो। सोचतां-सोचतां छैकड़ इण नतीजै माथै पूग्यो, कै अजमाणै में आपणो के लागै, बियां भी आपणै कनै सूं कोई रकम तो छदाम ई लागै कोनी। तीर निसाणै माथै लाग जावै तो कीं दोय पईसा आवणा ई है। इण काम नै कर र देखस्यां।

अेक संकळप जागणो सरू होयग्यो। चिमक र सोच्यो, के ठा, आपणै मनोरथ नै पूरो करावण में ठाकुर जी ई कोई गेलो घाल रैया होवै। बीं में थोड़ी फुरती-सी जागी।

बीं नै ठा हो कै मदन जी बजार मांयलै पुस्तकालय में रोज आवै। बो पुस्तकालय में गेड़ो काट र आयो, पण मदन जी दीस्या कोनी। गेट सूं बारै निकळतां बां पुस्तकालय रै कर्मचारी नै बां पेटै बूझ्यो तो बो केई देर बीं रै साम्हों बिजळईज्योड़ो-सो झाकतो रैयो, पछै बोल्यो, “रिटायर तो थे होया हो, मदन जी थोड़ा ई होया है, ई टैम तो बै बडोड़ी स्कूल में होवै। सिंझ्या पांच बजी स्कूल सूं सीधा बजार अर पुस्तकालय में आवै।”

“ओह” कैय र बो घर कानी खाना होयग्यो अर सिंझ्या पांच बजी सूं कीं पैली आय र मदन जी री अडीक करण लागग्यो। आधीक घंटा अडीक्यां मदन जी आयग्या। देखतां ई मदन जी बोल्यो, “कियां हो मास्टरजी, म्हारली बात कीं कोठै जची के?”

बै किणतिणावता-सा बोल्यो, “जची नहीं है तो जच जासी, पण म्हनै तो इण गेलै रो क ख ग ई ठा कोनी?”

मुळक्या मदन जी, “ठाह म्हे करवास्यां। आवो, सामलै होटल में चाय पीवां।” चाय पावतां-पावतां मदन जी प्रोपर्टी रै काम रा कीं गुर भी पाया। समझायां पछै बै कांधै ऊपर हाथ धरतां कैयो, “थारा के सिणियां में हाथ जावै। थारा पढायोड़ा चेला घणा ई पईसै वाळा है, बां सूं संपरक कर र बां नै प्रोपर्टी दिरावो, प्रोपर्टी रै काम में घाटो तो कदैई लागै ई कोनी। दो पईसा सदा ई फायदो मिलै। केई दिन लोगां सूं संपरक करस्यो, जणां मतैई

ठा लाग जासी, कुण लेवाळ है अर कुण कोनी। और हां, थाने प्रोपर्टी दूढण वास्तै कठैई जणै री दरकार ई कोनी, म्हारै कनै केई दूकानां, खेत अर घर रा पट्टा है, म्हें थाने सगळी जग्यां दिखा देस्यूं अर सगळ्यां री कीमत बता देस्यूं। मैणत कर 'र कोई सौदो थे पटा देस्यो तो थारा दोय परसेंट पक्का। अबै बोलो, के नुकसान है ?”

बजार नैडली पांच-सात दूकानां रा प्लोट, कटळां मांय बण्योडी दूकानां अर बजार रै कनै रा कीं मकान, बीनै मदन जी दिखाळ दिया। बो बांरी रेट अर साइज आपरी जेब आळी डायरी में टीप लिया। बीनै अचंभो होयो कै मदन जी इत्ती सारी प्रोपर्टी लेय राखी है। पण थोडा दिनां में बीनै पतो लाग्यो कै मदन जी री तो थोड़ी-सी प्रोपर्टी है, बाकी कइयां रो तो बै फगत बयानो देय राख्यो है। केई सीरवाळी री है। बयानै वाळी प्रोपर्टी नै बेगी निकाळण वास्तै बै जोर देंवता।

उणरै खातर आ दुनिया साव नूवी ही, पण बो अेक जणै नै अेक दूकान दिरवाणै में बेगो ई सफळ होयग्यो। दोयेक महीनां में उण दूकान री रजिस्ट्री होयां, मदन जी बीं रै हाथ में सत्तर हजार रुपिया धर दिया तो बीनै आपरी सफळता अर रुपिया हाथ में आवण रो दोवडो रळ्यो-मिळ्यो कोड होयो। बो सोच्यो—रुपियै में किती खुसी लुक्योडी रैवै। बो आपरै ठाकुरजी लिछमीनाथ बाबै नै सिंवरया। बीनै आं दोय-तीन महीणां में इत्तो ठा लागग्यो कै औ काम दीखै जितो सौरो भी नीं है, हजार भांत रा हिडकिया मंतरणा पडै अर कूड़ री तो बिरखा ई बरसाणी पडै। काम सौरो नीं हो, पण बीनै आपरो अैलाण भी साम्हों आंख्यां काढतो दीसै हो। कूड़ बोल-बोलाय 'र सांमलै नै चीणी रा धोरा दिखाय 'र ओधी में नाखणो पडै। प्रोपर्टी खरीदै जणां अेकर तो हरेक गाहक नै मूंघी लागै, पण पछै होळै-होळै किफायती लागण लागै। बीनै सरू सरू में केई भांत रा अचंभा होया, जिणमें अेक अचंभो औ ई हो कै कोई प्रोपर्टी लेय रैयो है अर कोई बेच रैयो है तो भी धरती माता तो बिती री बिती, बियां री बियां पड़ी रैवै। नीं कमती होवै नीं बधै। फगत ऊपर रैवणिया इणनै बेचै-लेवै। देखो, आ किती दयालु है, बेचणियै रो भी पेट पाळै। बो आंख्यां बंद कर 'र रोज ई धरती माता नै निंवण कर 'र बारै नीसरै। कानां रै हाथ लगाय 'र मन-ई-मन बरड़ावै, “हे माता, म्हें तो थाने कोनी बेच रैयो, म्हारी के खिमता है। लेवणियो भी कूड़ै बैम में है अर बेचणियो भी। आपनै तो बेरो ई कोनी चालै कै मिनखजात आपरै ऊपर बैठ 'र काई-काई कौतक करै ?

धरती माता नै सिंवरतां-सिंवरतां ई बो अेक साल में ई सात लाख नैड़ा रुपिया कमा लिया। मदन जी मास्टर बीं कानी देख 'र मुळकता रैवै। अेक दिन बोल्या, “सीख तो गया मास्टरजी थे इण धंधै रा सगळा पैतरा!”

बो लुळतारूपणै सू सरमावतो-सो बोल्यो, “ना ओ मदनजी, थारै जित्ता कणां आवै, म्हें तो कांधै ऊपर थारो हाथ है जणां कटकटिया-सा लड़ावूं। भाजणो म्हारै सारै है अर देवणो ऊपरलै री मरजी उपरां है।”

“बो तो खैर है ई।” कैवतां मदन जी बीं रै कान कनै आपरो मूंडो लावतां होळै-सी कैयो, “बो चोरड़ियां वाळो पट्टो बिकवावो जिको दोय रुपिया सावळ मजूरी होवै। बीं में थानै बोहळा सारा पर्ईसा देस्यां।”

प्रोपर्टी रै धंधै में रुपियां रै लालच रै अलावा दूजी कुणसी बात होवै? बो कैयो, “कोसिस करण में कोई कसर कोनी छोड़ा, बाकी सांवरियो जाणै।”

साचैई बो घणघोर कोसिस में लागग्यो। करतां-करतां अक दिन चोरड़ियां री हेली अक जणै रै चित्त चढाय ई दी। रजिस्ट्री रै दिन बै पांच-पांच सौ रुपियां री छह गड्डी घरवाळी रै हाथ में धरी तो मां-बेटो दोवूं ई हरख कस्यो अर कैयो, “काम तो चोखो है, पण मदन जी तो के ठा कित्ता ई कमाया होसी? पछै बेटै कैयो, “थे थोड़ा डरोक हो। हिम्मत कोनी थारै में, थे भी मदन गुरुजी दाई साई देय र सौदै नै अटकाय लेवता तो पांच गुणा पर्ईसा कमावता।”

बो बेटै रै चेहरै कानी जोयो, जोवतो रैयो। अकर तो हठात उण माथै रीस आई, पण बो सदा सू गोख राख्यो है कै औलाद माथै काई रीस करणी। हवा है आजकाल री, फैमबायरी औलादां जामण लागगी। कोई अक घर री बात कोनी। बो होळै-सी कैयो, “आपणै इयां ई ठीक है, रामजी इण भांत सुणता रैवै तो छोरी नै धोरियै चढा देवां।”

चार-पांच साल में करतां-करतां बो छैकड़ पच्चीसेक लाख रुपिया आपरी इण कमाई सूं भेळा कर ई लिया। आं पर्ईसां सूं बो चावतो तो कोई आपरी छोटी-मोटी जमीन लेय सकता हो अर भाव आयां पांच पर्ईसा सावळ कमा सकतो हा, पण बो कोई भांत री रिस्क कोनी लेवणी चावतो। आं रुपियां नै बो नीं तो बैंक में नाख्या, नीं कोई जणै नै ब्याजीणा ई दिन्हा। चार-पांच साल ताई अंडै दाई सेंवतो रैयो। आठ भरी सोनो ले लियो, जद बीं रा भाव बधणा सरू होया तो पैली तो बो सस्तो होवण नै अडीकतो रैयो, पण जद लाग्यो कै औ तो बधतो ई जावै तो जिको भाव बीं दिन हो बीं में ई खरीद लियो। बीं रै खरीदयां पछै पंदरै हजार रुपिया भरी बधग्यो तो बीं नै लाग्यो कै बीं री हिम्मत ठीक ई रैयी। अकाउंटेंट बेटो रोज बीं नै कैवतो, “घर में रिस्क क्यूं राखो। पांच लाख रुपिया साल रा तो खाते में ई घाल सको। पण बो कैवतो, म्हनै ना समझा, म्हारै जियां जच्योड़ी है, बियां ई करण दे। ब्यांव में सत्तर भांत री चीजां खरीदणी होवै, म्हनै कोई बैंक जाणो नीं, नीं ब्याज चाईजै, म्हनै तो अै पर्ईसा छोरी रै लगावणा है, इण निमत ई भगवान देवै।” बेटै समझावणो छोड दियो।

पण, घरवाळी देखती कै पैली अै नचीता सोवता, पण जद सूं अै औ प्रोपर्टी वाळो नूंवो किसब बपरायो है, अै रात रा दोय-तीन बार उठै।

बिचलै छोटै कमरै मांय बो आपरी इण सम्पति नै राखतो। गळी माथै मकान होवण सूं बीं नै लागतो कै चोर-चकार सूं सावधानी राखणी भोत जरूरी है, चोर सूं माड़ो संसार में कोई मिनख कोनी होवै। सगळा सपना नै बो अक मिनट में गोबर रा कर देवै। चोर नै

कितोक टैम चाईजै, दस मिनट घणी। म्हाटां नै के ठा कियां सुगंध लागै। बेटो बीं रै रात्यूं भूवणै रै कारण कैवतो, “इणनै बैंक में कनीं नाख देवो, और कीं नीं तो अेक लॉकर ई लेय लेवो।” पण बो के ठा क्यूं बैंक, लॉकर, कच्चो-पक्को जियांकली बातां सूं डरतो रैयो है? कैवतो, “अबै किताक दिनां री बात है, ब्यांव री खरीदारी तो सरू कर दी। पैली मास्टरी करता जणा कोई भै कोनी हो, अबै गांव रा सगळा जाणै कै मास्टर जी प्रोपर्टी रो काम करै। लोग जाणै जिकी बात नै चोर भी जाणै। आपरी सावधानी नै कोई कोनी नावडै। बो कैवतो रैयो, “बैंकां में किस्या फ्रॉड कोनी होवै, बैंकां रा लॉकर किस्या कटै कोनी? चोरां रै आगै कीं सुरक्षित कोनी। आपां नै तो रामजी-रामजी कर र छोरी नै धोरियै चढावणी है।”

बेटै नै लागतो कै पिताजी रै माथै में दोहिती रो ब्यांव कोई लोचो जलमा दियो। अै अेक इकोवड़ी धुन में आगै बध रैया है। महीनै भर में ब्याव री तयारियां में, साई सपटां में, खरीदारी में सगळी रकम अेहै लागणी सरू होई तो मास्टर रै चेहरै माथै रौनक बधण लागगी। बीनै संतोख हो कै जिण धेय सूं आपरो इलम कस्यो बो बिना किणी जोख्यूं रै पूरो होयग्यो। दोहिती रै सासरै सिधावण सागै बीं नै इयां लाग्यो कै बो जाणै दोवड़ो जुध जीत लियो, अेक तो चोरां नै दाळियो ई कोनी ले जावण दियो अर दूजो बो आपरै अैलाण नै पूरो कर सक्यो। अबै बतावो काम पूरो होयां, नींद कोनी लेवै कोई आदमी?

पण नींद रो काई अचंभो, अचंभो तो इण बात रो हो कै बै न्हा धोय र तयार होया अर आपरी घरवाळी नै जीमण री वेळा कैय रैयो हो, “अेक काम तो पूरो होयग्यो, अबै अेक काम बाकी है, अबै बीनै पूरो करस्यां, सांवरो चाहसी तो?”

ब्यांव री बच्योड़ी मिठाई पुरसतां घरवाळी रा हाथ खिणेक ढबग्या। बा बूझ्यो, “अबै काई काम बाकी है?”

बो थोड़ो-सो किणतिणायो, सोच्यो कैवां कै नीं कैवां, पण पछै सोच्यो, बात तो आपां टोर ई दी, अबै लुकोवण सूं काई सार है।

बो कैयो, “गळी रै सांमलो पट्टो लेयस्यां।”

“आपां पट्टै रो काई करस्यां?” घरवाळी पूछ्यो।

बो दूण नीची कर र कैयो, “आपणी गळी बेजां ई पतळी है, बो पट्टो गळी में छोड देस्यां, गळी में मोटो सारो चौक होय जासी, टाबर सोरा-सोरा रमसी।”

घरवाळी मास्टर जी रो लिहाज ई कोनी राख्यो, “हे राम!” कैवती माथै में बटीड़ लियो अर बड़बड़ाई, “आं तो पाछी उडा ली आपरी नींद।”





हरिमोहन सारस्वत 'रूख'

म्हारा भाईजी

दिनुगै आठ सवा आठ रो टैम, म्हूं चा रो कप मेल्यो ई हो कै मोबाइल माथै रामेसर भाईजी री घंटी बाजी।

“भागा! कठै है?”

“पगां लागूं भाईजी, घरे ई हूं।”

“सुणै है के, पिरथी रै कीं लागगी यार...!”

“हैं... इयां कियां?” बांरी बात सुण 'र म्हारो सै 'कारो-सो निसरग्यो।

दूध आळी अेक गाडली दे काढी... घणी तो को लागी नीं, पण थूं अबा 'र ई रवाना हो दिखाण!”

“भाईजी ठीक तो है नीं... सिर में तो को लागी नीं... कठै है बै... ? बात कराया दिखाण!” म्हैं छिणे 'क में आकळ-बाकळ होग्यो।

“अबार ई मंडी अस्पताळ में लाया हां, बेचेत है, थूं आज़ा लाडी...।” रामेसर भाईजी रो सुर चिंता में लटपटाइजेड़ो हो।

“हां हां, म्हूं अबार ई रवाना होवूं... रामेसर भाईजी, थे ध्यान राख्या भाईजी रो... अठै पार नीं पड़ै तो बीकानेर ले जाया....पईसै-टक्कै री दर ई चिंता ना कर्या...!” म्हारो काळजो तिरूं-डूबूं होवण लाग्यो।

भाईजी रो फोन लगायो, बंद आवै हो। पुनकी री मां नै बतायो तो बा रोवण दूकगी। मसां बोली राखी। उणनै त्यार होवण री ताकीद करी। दो-तीन जरूरी फोन कर्यां पछै 'ओला' सूं टैक्सी मंगवाय ली। पाड़ोसी भायलै गिजूभाई नै बुलाय 'र घटणा री जाणकारी दिन्ही अर घर री भोळावण देय 'र घटै भर में गाम सारू रवाना होयग्या।

:: ठिकाणो ::
रूख-भायला चौक
सूरतगढ़ (राजस्थान)
मो. 9414090492

पण गाम किस्यो नेडै ई है! सूरत सू हजार किलोमीटर रो सफर... लगोलग चाला तो चवदा-पंदरा घंटा लागै पूगतां-पूगतां, रेलगाडी अर बस सू आवां तो पूरा दो दिन। ढाई बरसां री पुनकी मां रै खोळै में बैठी कार री खिड़क सू बारै तकावै ही। उणरी मां रै ऊजळै चेहरै रो उजास अबार मोळो पड़ेडो हो... अर म्हारो... ना बूझो...! टैक्सी रो डलेवर भलो आदमी हो, बात रो ठा लाग्यां पछै बण गाडी में चालतै गाणां नै फोर 'र हड़मान चाळीसो लगा दियो, गाडी री कीं स्पीड बधाय 'र बो आप ई म्हारै दुख में सरीक होयग्यो।

म्हें रामेसर भाईजी नै घड़ी-घड़ी फोन लगावूं, पण बां रो अेक ही ऊथळो—

“ठीक है रे भागा...!”

“ठीक है तो बात क्यूं नीं करावो... बांरो फोन बंद क्यूं आवै?”

सवालां रै भतूळियै म्हारै अंतस नै चकरी चढा राख्यो हो। क्यूं, कद, कियां, कठै सू लगाय 'र अबै कियां जिस्या सवाल फुर-फुर उथळो मांगै, पण देवणियो कोई नीं। बिरजो अर बदरी, जिकां कनै भाईजी री थोड़ी घणी उठ-बैठ ही, बांनै ई फोन लगा धाप्यो, पण बठैई हां-हूं रै अलावा कीं नीं। मन कैवै, हो न हो, कीं न कीं दुरघट है... इसी मनगत में आदमी नै ऊंधी ई सूझै, सावळ सोझी रा तो आडा ई नीं खुलै। गाडी री आगली सीट पर चेताचूक सै बैठ्यो म्हें छेवट आंख्यां मींचली। रात ई तो मोडै-सीक भाईजी रो फोन आयो हो, खासा ताळ बात करी, वीडियो कॉल सू पुनकी नै लाड लडायो। पण अबै... अेक अणजाण चिंता रा काळा-धौळा चकारिया फेर म्हारी आंख्यां आगै भूवण लाग्या।

दिनुगै चार बजे रै नेडै-तेडै गाम पूग्या। गवाड़ सू लेय 'र घरआळी गळी तंई पसरेड़ी सूनैड भोत डरावणी लागी। दोयेक कुतिया अधकाची-सी नौद सू कान फड़फड़ावता जाग्या, मोरियां रा टहूका सुणीज्या। घर री बाखळ में पूगतां ई पगां रै थड़ा बंधग्या। बैठक री चौकी पर दरी बिछ्योड़ी, जिण पर पांच-साते 'क जणा आडा सुधा पड़्या दीस्या, गाडी रो घरड़ाट सुण 'र बै बैठा होयग्या। कदास, म्हारी उडीक में आं जाण्या-पिछाण्या चेहरां भी आ रात छुलते-छुलते काढी है। रामेसर भाईजी अर बदरी ऊभा होय 'र गाडी नेडै आया। म्हें कीं बूझतो, उणसूं पैली रामेसर भाईजी आंख्यां में पाणी भर 'र म्हनै छाती सू चेप लियो—“हूणी आगै कोई जोर कोनी भागा, पिरथी आपां सगळ्यां नै छोडग्यो।” लारलै पंदरा घंटां सू जिकै दरद भारियै नै म्हें आस री जाबक ई कमजोर डोरड़ी सू बांध राख्यो हो, छेवट वा घरै पूगतां ई टूटगी। म्हारी आंख्यां में पाणी रो बादळ-सो पाटग्यो, आ गत देख 'र पुनकी अर उण री मां ई कूकण लागी, मांय सू दो-तीन लुगायां बारै आई अर पुनकी री मां रो बूकियो झाल मांयली साळ कानी लेयगी। भोरांभोर बाखळ रै खेजडै पर सरू होई चिड़कल्यां री चूंचाट भेलै घर में रोवा-कूको मचग्यो...।

नैणां रो ज्वार कीं थम्यो तो ठाह लाग्यो, पिरथी भाईजी रै कोई गाडी कोनी ठोकी, बै तो आप ई आपरी ज्यान देय दी। पण क्यूं...? इण बात रो कीं कनै ई जवाब कोनी!

परसूं ई तो म्हारी बात होई बांसूं, पछै रात रात में आ के बणी... ? म्हनै बताईज्यो, काई ठाह कद माखर गई रात नै बै हाईवे सारली मेन कनाळ में छाळ मारग्या। दिनुगै मळकीसर लिफ्ट कनाळ रै जाळ में बांरी ल्हास लाधी, बेलदार सुरजै देखतां ई ओळख लियो अर रामेसर भाईजी नै फोन कऱ्यो। गाम रै पांच-सात भाई बेल्यां भेळै पुलिस ई मौकै पर पूगगी, अधफूली ल्हास नै बारै कढाई। ल्हास अबार मंडी अस्पताळ री मोर्चरी में है, पोस्टमार्टम होसी, बस म्हारी ही उडीक ही...।

म्हनै चोखी तरियां याद है, जद कदेई गाम आवतो, भाईजी भाज'र साम्हीं आवता। आज म्हें साम्हीं जा रैयो हूं, पण म्हारै साम्हीं आवणियो अबै कोई नीं! मोर्चरी में पड़ी भाईजी री ल्हास देखी, फूलेड़ो पेट, आंख्यां बारै आयोड़ी, खिंडेड़ा बाळ, धोळै कुड़ितयै सू झाकती देह, पजामो ई जाणै कठै ई अड़'र फाट्यो होवै...। नै'र का कुवै-खाड में लाधी ल्हासां भोत जल्दी गिंधावण लागै, फेर अठै तो मोर्चरी री बांस... भाई री ल्हास री आ गत देख म्हारो तो काळजो ई फाटग्यो, कोरां बिसाई लेवता आंसू भळै चाल पड़्या, म्हें भाईजी रै सुन्न पड़्यै हाथ नै झाल्यो, पण काई ठा कुण म्हनै ठिरड़तो-सो मोर्चरी सूं बारै ले आयो।

पुलिस म्हासूं दो-चार सवाल बूझ्या, पण बांरा उथळा कठै! जे म्हां कनै ई होवता तो म्हें आपरै मांय उठतै सवालां रो पेट नीं भरतो! आ भी कैयी, “जे किणी माथै कोई सक, कोई अनेसो होवै तो बतावो, मुकदमो दरज कर लेवां।”

म्हें के बतावतो! रामेसर भाईजी बात्रै कैयो, “साब, ऊजळै चरित रो, पंछी आदमी हो पिरथी... जुओ, सट्टो अर दारू तो दूर, चाय रो ई बैल कोनी... सगळै गाम नै बूझल्यो भलाई...। सुणै जको ई इचरज करै, पिरथी रै क्यांरी ब्याधि! कीं रो लेणो अेक नीं देणा दो... म्हारै तो जचै ई कोनी, बेटी आ के बणी? क्यूं बण इस्यो माड़ो काम कऱ्यो?”

“कीं ठाह कोनी पड़ै, आदमी किती-किती अर किसी-किसी ब्याध्यां लियां फिरै आजकल!” तख्ती पर कागद जचावतो हवलदार आपरै चस्मै सूं म्हारै कानी झांकतो बोल्यो।

“कोई सुसाइड नोट तो लाध्यो कोनी, अर फोनडो ई नैर में ई पड़-पुड़ाग्यो दीसै, जे लाधै, का पछै कीं बात रो ठाह लागै, तो थाणै में बता देया!” बण म्हां सूं केई पानां पर दस्तखत कराया अर आपरै कागदां में मरग दरज करी। ई सूं बेसी बै करै ई के, बां कनै इसी मौतां री तपतीस सारू बेल्ह कठै! जियां-तियां पोस्टमार्टम होयो... ल्हास मिली... घरै ल्याया... रिस्तेदार पूग्या... गांम भेल्लो होयो... रोवा कूको... किरळाटो... नारेळ... खोपरा... घी... अर पछै चित्रकूट काशी... राम नाम सत है...! बस इती ताळ लागी, अेक दिन पैली म्हनै फोन पर सीख देवता भाईजी म्हासूं अेक झटकै में बिछोड़ो लेय लेसी, आ कदेई सुपनै में ई नीं बिचारी।

दो तीन दिन तो बाखळ भरीजी-सी रैयी। भहर होयोडै सिर पर धोळो पोतियो बांध्यां म्हें भींत सारै भींत बण्यो बैठ्यो रैयो। आंख्यां कदेई भरीजती, कदेई सूकती। आवता-जावता लोग बाग, भाई बेली, रिस्तेदार सै धीजो बंधावता, इचरज सूं बूझता, इयां कियां बणी ? पिरथी तो पक्को आदमी हो पछै चाणचकै ? रामेसर भाईजी, बिरजो अर इक्का-दुक्का लोग थोड़ो-घणो उथळो देंवता, बंतळ करता, बाकी सै चुपचाप अर बोलाबाला। सोग अर मून रो जबरो सगपण होवै। जे खरडो काळमौत रो होवै, तो बैठण सारू आवणिया लोग चाय-पाणी लेवणै में ई संको मानै। बै दोनू हाथ जोडै आवै, घड़ी खंड बैठै अर ऊभा होय पाछा हाथ-जोड़'र जावता रैवै। इण आवाजावी में म्हें भरचै मन सूं बोलोबालो बैठ्यो उडीकबो करूं, कदास धीजो बंधावणियां भेळै अेकर भाईजी ई आ जावै तो...।

पुन्यू री चानणी दाई मुळकती म्हारी जीयाजूण में चाणचकै ई अमावस कियां पसरगी, इण बात रो उथळो कठै जाय'र सोधूं भाईजी ! थे आ के करी, कीं तो बतावता, कैय'र जावता। रामेसर भाईजी साथै बांरो चोखो बेलीपो हो। पण बै भी कोई खास बात नीं बताय सक्या। बदरी, बिरजै अर गाम रै दूजै लोगां नै बूझ धाप्यो, पण सगळा, अेक ई बात करै, “जचै कोनी, पिरथी इयां कर सकै !” बालू काकै तो म्हनै ई पंजाळी में लेय लियो—

“तेरी तो कोई बात कोनी होई रे भागा... !”

“काका, जे बात ई हो जावती तो म्हें बाप जिस्यै म्हारै भाई नै जावण थोड़ी देंवतो।” म्हें गळगळो पड़्यो।

“क्यूं ऊंधी बात करो काका, ओ घर थांसूं छान्रो है के !” रामेसर भाईजी बालू काकै नै खरी मींट सूं दबकायो तो बांरी बोलती बंद होयगी।

पण बातां रो काई है, इस्यै मौकै आछा-माड़ा मंडाण मंडै ई। जे घर में काळमौत होयोड़ी होवै तो मूंडा भलाई किणी रा हो, पकड़ीजै कोनी। म्हें रामेसर भाईजी नै कैयो, “आपां रै बोलण रो बगत कोनी, भाईजी।”

भाईजी रो म्हारै पर इत्तो भरोसो हो कै बिना पृछ्यै गांवतरै ई नीं जावता, भौजाई रै चल्यां पछै बांनै गाभा अर चम्पलां तकात ई म्हें लाय'र देंवतो। कोई करजो कोनी, कठैई कीं रै साथै कोई राड़ कोनी, कदेई बां रै चरित बाबत कोई माड़ी बात नीं सुणी, आखो गाम इणरी साख भरै, फेर आपरी लैण चालणिया भाईजी इत्ता अणबस क्यूं होयग्या कै आपरी जान गमाय दी ? काई जीयाजूण सूं बांरो मोह भांगीजग्यो ? काई भौजाई रो बिछौड़ो खायग्यो ? का पछै अेकलपै सूं अमूझग्या ? म्हें बांनै सदाई म्हारै कनै आय'र रैवण रो कैवतो, म्हारै होवता अेकला क्यूं रैवो, पण बै हंस'र टाळ देवता, “गवाड़ी कुण सांभसी रे भागा... ! चालतै चलण अठैई ठीक है रे... परबस होयग्या जणां तो आवणो ई पड़सी !”

आं सवालां रा कोई जवाब नीं सूझै ? सारो घर छाण लियो, कदास कठैई कोई सुराग लाधै, कागद-पत्र लाधै, कीं तो साम्हीं आवै जिको भाईजी री काळमौत रै सवालां रा उथळा देवै। साळ में बां री खुल्ली अलमारी है ज्यू ई पड़ी है। अलमारी रै खानां में मरफा रो रेडियो, कीं खुल्ली रेजगारी, अक पिलसण, छोटी-सी हिसाबी डायरी, बैंक री कोपी, काच-कांगसियो, बोरोलीन, आवळै री सीसी, काच री डबड़ी में थोड़ी 'क सूफ...'।

आज चौथो दिन है भाईजी नै चल्यां। खरडै पर बैठ्यो हूं, साव अकलो, सवालां री अगन सूं घिस्यो। इण अबखै बगत में सै सवाल है जठै ई ऊभा है ! तिबारी सूं आंगणै ताई मून पसर्यो है चौफेर। घणो अपरोगो, भोत अणखावणो। बाखळ में खेजडै बैठ्यै दो-चार कागलां री कांव-कांव सूं मून टूटै कोनी, औ तो सियाळै री रात में बेटैम बाजतै किणी अलार्म-सो बधतो ई जावै, रह-रह'र खीरा-सा उछळै कानां में...। दिनुगै रा इग्यारा बजग्या, पण हाल ताई कोई भाई बेली नीं दुक्क्यो। अळोच में भीत टंग्यै कलेंडर साम्हीं जोवूं, ठाह लागै, आज थावर है। पछै तो लुगायां-पतायां ई नीं आवैली। कदास अ वार अर बगत इणी सारू तो नीं टाळीजै कै कोई अकलो बैठ'र रोय सकै, मांयली अभड़ास काढ सकै ! जी तो घणोई करै धाप'र रो लेवूं, पण रोयां रोज कद आवै अर आवै ई तो आंसूवां री दरकार कठै। आंसू तो समदरियै चढ्यो ज्वार है, खाताई सूं चढै, हळवै-हळवै उतर लेवै। पण आंसूड़ा ठम्यां पछै जिको रोवणो होवै बो मांयली मार मारै, अर जे अकलपो होवै तो अंतस रो रोवणो सावण रै लोर-सो बरस ई बोकरै...

छेवट म्हारी भरीजी आंख्यां भीत पर लटकती अक फोटू पर जाय'र बिसाई लेवै। आ फोटू पच्चीस-तीस बरस जूनी होवैली, फोटू में म्है भाईजी री आंगळी झाल राखी है। म्हनै कैवणो चाईजै, भरोसो झाल राख्यो है। बै म्हारै सूं लगैटगै बारह-तेरह बरस मोटा हा, मांय-बिचाळै दो बैनां और जलमी बतावै पण रैयी कोनी। कोई अणजाण आ फोटू देखै तो म्हे दोनू बाप-बेटा-सा लागां। बियां भाईजी हा ई जीसा री जिग्यां, जिका उण बगत फौत होयग्या, जद म्है मां रै खोळै में बैठ हांचळा चूंध्या करतो। जीसा किस्सा 'क हा म्है नीं जाणूं, पण बाप काई होवै, औ भाइजी रै होवता थकां कदेई ठा ई पड़ियो। बै आप पांचवीं ताई भण्या, पण म्हनै कॉलेज री पूरी भणाई करवाई। जीसा रै चल्यां पछै भाईजी पढाई छोड दी ही अर मां रै साथै खेती री सार संभाळ करण लाग्या। घर में ऊंटगाडो हो, पचास बीघां रो बिरानी खेत, चोखो भलो धीणो-धापो, धाको धिक्कां बगै हो। मां लारै लागी तो भाईजी रो ब्यांव ई बेगो ई कर दियो। रुणझुण करती भौजाई घर आयगी, म्है बांरै गोडै बैठ्यो, भाईजी रै साळै म्हनै नेग दियो। म्हनै याद है, मां रै तो जाणै पगां घूघरिया बंधग्या होवै...। घर में बीनणी नै फिरती देखती तो बा अणूती राजी होवती। दिनुगै उठती

जणा सें सूं पैली जीसा री फोटू सामीं हाथ जोड़ती, म्हानै ई हाथ जोड़नै सारू कैवती ।
'रामजी दुखां भेळै सुख ई मोकळा देवै' आ ओळी बां रै होठां री साथण ही ।

पण सुख अर दुख तो आपोआप री बारी नै उडीकै, तूं चाल, अर म्हें आयो । कांई ठा कांई हुयो, भाई रै ब्यांव रै चौथै बरस ई अेक दिन चाणचकै मां म्हां सगळां नै छोड'र जीसा कन्नै जाय पूगी । म्हे मां-बायरा होयग्या । भाईजी भेळै भौजाई माथै ई बगत सूं पैली इण घर रो सगळो भार आय पड़्यो । भौजाई कद माखर म्हारी मां बणगी, म्हें नीं जाणूं । पण इत्तो याद है, भौजाई मां दांई म्हारो ध्यान राख्या करती । गाभै-लतै सूं लेय'र म्हारै खावण-पीवण में कदेई नीं चूकी बा, अेक टैम जे भाईजी रोळा कर्या तो भौजाई ही म्हारी ढाल बणी ।

“राधा ! तूं ईनै घणो सिर ना चढाया कर !” भाईजी उण घड़ी सदाई भौजाई नै टोक्या करता । भौजाई म्हें पढाई में ध्यान देवण सारू भोत समझाया करती । इण लाड-सनेव रो कदास औ भी कारण हो कै अेक तो म्हें बारी आंख्यां साम्हीं मोटो होयो अर दूजो बारै कोई आस-उलाद नीं बापरी । म्हारी मां तो पोतै-पोती रो मुंह देखण सारू झुरती गई । बीनणी रै आस बंधै, इण सारू बण जीवतै-जी घणाई डोरा-जंतर करवाया, डाक्टरां सूं लेय'र देई-देवतां री सै धोक लगाय ली, जागण जम्मा तक करवाया, पण बिधना रा रंग कुण जाणै ! कठैई उपरांथळी देवै, कठैई अेक तूंतडै रा ई टोटा ! मां रै चल्यां पछै ई भौजाई घणी दवाइयां खाई होवैली, दवाई लावण अर खावण में भाईजी ई लारै नीं रैया पण रामजी बारी अेक ई नीं सुणी । उलटै होई आ कै बां दवाइयां रै 'साइड इफेक्ट' सूं गणगौर-सी म्हारी भौजाई पीळी पड़ण लागी । पीबीएम में केई दिनां भरती राखी, जद कीं सावळ होई ।

बां दिनां ई म्हारी बी.अे. पूरी होयगी । भाईजी रै लागतां में अेक साळो गुजरात में ठेकेदारी करतो, खेती अर नौकरी में कीं कोनी पड़्यो, आ जाण'र ई भाईजी म्हें बां कनै भेज दियो । दो-तीन बरस में म्हें बां रै साळै कनै रैय'र ठेकेदारी रा कीं गुर सीख्या अर पछै आपरो ठीकठाक-सो जाचो सूरत में जचा लियो । भाईजी म्हारो होसलो बधावता रैया, दूजै कानी भौजाई म्हारै ब्यांव री त्यारी करती रैयी । आथण-दिनुगै अेक ई रट—“भाई रो घर बंधावो !”

छेवट अेक दिन घणै लाडां-कोडां म्हारो ब्यांव मंड्यो, नेगचार होया, उच्छब मनाईज्या । भौजाई सागी मां दांई उछळती फिरी, बीनणी बधार'र नचीती होयगी बा तो । म्हारी जोड़ायत नै बण कदेई देराणी नीं जाण्यो, बीनणी कैय'र ई बतळायो । म्हां दोनां रो भोत लाड राखती भौजाई । म्हें सूरत अर गाम बिचाळै आवतो-जावतो रैवतो, घणा दिन हो जावता तो भाईजी सूं फोन करवाय'र बा गाम बुलाय लेंवती । बां दिनां में नवो-नवो काम हो, म्हें भाडै रै मकान में रैवतो । “बीनणी नै तो मकान लियां ई साथै भेजस्यां” भौजाई री इण बात रै लारै ई भाईजी म्हानै कैयो—

“भागा ! स्टैरदारी में भाड़ै रै घरां रो के भरोसो, कद खाली करणो पड़ै! छोटी ई सही, अक ठियो, आपरो होवै तो टाबरां रै सोरफाई रैवै रे... आपरो घर, थूक थूक भर... कोई टोकणियो कोनी... तू कोई घर सीध कर ले।” अक बड़ी बिल्डिंग रै आठवें मालै रो श्री बैडरूम फ्लैट, जठे म्हें अबार रैवूं, भाई-भौजाई लारै पड़्या जणां ई लेइज्यो, पईसा ई बां दिया, नीं जणां म्हें तो भाड़ै रै मकान में ई पड़्यो रैवतो। फ्लैट देख र बै धणी-लुगाई भोत राजी होया। आपरी देखरेख में बां ई मकान रो न्यांगळ करवायो, हवन में धिंगाणै म्हनै अर पुनकी री मां नै बिठायो। गाम आय र सब नै बधाई बांटी, बैन स्वास्ण्यां नै तीवळ तागो, रामजी सब नै तूठै! आ ई भावना रही भाई भौजाई री।

पण बिधना री भावना बदळगी। इन्नै तो पुनकी पेट पड़ी अर बिन्नै गाम आयां रै तीजै महीनै ई भौजाई मांचो झाल लियो। म्हें अर भाईजी पीबीएम सूं जयपुर ताई लियां फिस्था। रिपोट मुजब बां रै बच्चादानी रो कैसर हो, काई ठा कद माखर लास्ट स्टेज बणगी। म्हें लागतो, भौजाई नै सौ-कीं ठाह हो, कदास जणाई बा म्हारै ब्यांव अर घर री खतावळ करती होवैला! बांरी बेमारी रै दिनां में ई पुनकी रो जलम होयो। मांचे पड़ी भौजाई अणूती राजी होयी, लिछमी आई है आंगणै! बांरी इच्छा मुजब भाईजी बास-गवाड़ री लुगायां नै भेली करी, थाळी बजाई, गुड़ बंटायो। भौजाई री आंख्यां रो उजास कीं बधतो-सो दीस्यो, पण घणा दिन को काढ्या नीं। पुनकी तीन महीनां री होई कोनी कै अक दिन भौजाई म्हानै छोड र जावती रैयी। म्हें लाग्यो, म्हें फेरूं अनाथ होयग्यो हूं, पण काई जोर!

म्हें अर पुनकी री मां रोवता जणां भाईजी धीजो बंधावता, “इत्तो ई सीर हो रे भागा! थारी भौजाई बडभागण ही, सदाई कैवती कै भागो म्हारो पेटजायो नीं तो काई, सासू जायो बेटो तो है ई, उणरो ध्यान राख्या...” कैवतै-कैवतै भाईजी आप गळगळा हो जावता। म्हें बांनै बांथा भर लेंवतो, बै म्हारो सिर पळूसबो करता।

भाईजी नोकिया रो छोटी-सो हैंडसैट राख्या करता। बै फोन पर घणी बात नीं करता, हां रेडियो बांरी जान ही। म्हें मरफी रो अक छोटी-सो रेडियो सदाई बारै कनै देख्या करतो। भजनां अर पुराणी हिंदी फिलमां रै गीतां रा चासकू हा भाईजी! बां भेलै आप ई रागळी करता। विविध भारती री सगळी सभावां पूरी सुण्या करता। भौजाई रै चल्यां पछै बै अणमणा-सा रैवण लाग्या। रेडियै सूं ई बांरो मोह टूटग्यो। “जांही बिधि राखे राम तांही बिधि रहिए...” बांरै होठां पर चढ्यो ई रैवतो। बै दोनूं टैम थानां में दीवो-बत्ती करता, हड़मान चाळीसै रो पाठ करता, जचती जणां सुंदरकांड ई कर लेंवता। म्हें घणी कोसिस करतो, बै म्हारै साथै सूरत चालै, पण बै सदाई टाळ देंवता। म्हें फोन पर बात करतो जणां बस हां-हूं कर रैय जावता। रोटी-टुकड़ै सारू घणी आफळ नीं करता। हाथां पोवण में बांनै जाबक ई आळस नीं आवतो। औ भी कैयो जा सकै, किणी दूजै री बणाई रसोई बांनै दाय

भी नीं आवती। खेत तो केई बरसां सूं तीजीयै दियोड़ो राखता, पण सार संभाळ पूरी लेंवता। पुनकी अर बीनणी रो ध्यान राखणै री सीख देंवता। साले 'क पैली सूरत आया जणा म्हुं धिंगाणै बांनै सैमसंग रो अेक स्मार्ट फोन दिरा दियो। बै रोळा ई कऱ्या।

“मेरै कांई काम रो है रे भागा! आपणै तो औ ई ठीक है, आवै जणां सुणल्यां, जचै जणां करल्यां, घणो पंपाळ कोनी।”

“भाईजी, थे आपणै भजन अर गाणा सुणबो कऱ्या, जचै तो फोन पर देख ई लेया अर हां, इणमें थारो विविध भारती ई चालै, रेडियो री दरकार ई कोनी...।”

बां घणोई बरज्यो, पण म्हेँ चावतो बांरी उदासी कठैई बिलमै ई तो। भौजाई थकां तो बै भळै ई चेळकै में रैवता, पण अबै साव ई मोळा पड़्या। सूरत में बांरो घणो जी नीं लागतो अर पांच-सात दिनां में ई बै जावण री टिगट करावण रो कैय देंवता...। बातां तो घणी चेतै आवै, पण सवाल है जियां ई ऊभा है। म्हारी चेतना भींत टंगी फोटू सूं हेठै उतर आवै, पाछी खरडै पर... जठै म्हेँ अर म्हारो अेकलपणो दोनूं बैठ्या हां, मायत मरेड़ा...। माड़ो बगत काट्यां ई नीं कटै, घड़ी रा सुइया ई मोळा पड़ता लखावै। पांचवो दिन, छठो दिन... आठवों... दसवों... बारवों!

पण इसी मौत में क्यांरा बा 'रा! बडेरं री घालेड़ी लीक है, छूटै ई कियां! दो-पांच रिस्तेदारां भेळै म्हारै सासरला ई पूग्या। रीत सारू पोतिया तो बंधाणा ई पडै, उढावणी करै ई कींरी? परिवार रैया कठै अबार! फेर, म्हारै तो हो ई कित्तो 'क, काका-बाबां री जिग्यां बेल्ली, बैन स्वासणी भगवान दी ई कोनी। हां, नानाणै सूं मामो दो दिन पैली आयग्या हा, गरुड पुराण पूरी होयां पछै बां ई म्हारै पोतियो बंधायो। म्हारै साळै ई अेक सुरंगो पोतियो जियां-तियां म्हारै सिर पर पळेट दियो। म्हारी आंख्यां अर मन दोनूं भरीजेड़ा, पण ढुळक्या कोनी! किणी गैलसप्यै दाई म्हेँ आंगणै में ऊभ्यै मिनखां नै तकबो कऱ्यो, आयोडै रिस्तेदारां म्हारै मोढै माथै हाथ मेल 'र धीजो बंधावण री करी। बांरै साथै आयोड़ी बडेरि लुगायां-पतायां ई म्हारो सिर पळूंस्यो अर टुरती गई। हळवै-हळवै घर री बाखळ सूं अेक-अेक कर 'र सगळी गाड्यां नीसरबो करी, लारै रैयो तो बस अेक सरणाटो... भोत अणखावणो...

छगन पंडत रै कैयै मुजब बा 'रा रै पांच दिनां पछै ई महीनै आळो घड़ियो भरा दियो। छोटो-सो हवन होयो, गड-गासियां सूं लेय 'र पांख-पंखेरुआं रा चुग्गा ई घलवाईज्या। जीमण सारू बास-गवाड़ रा थोड़ा घणा 'क टाबर जरूर आया। आपो आपनै समझायो, लै रे जीवड़ा, भाईजी साथै इतो ई सीर दियो भगवान...।

छेवट, काम-धंधो तो सामणो ई पड़सी....। घर रै ताळो लगावती बेळा म्हेँ काळजै नै घणोई काठो कऱ्यो, पण आंख्यां सूं चौसरा चाल पड़्या। जिण घर में म्हेँ पाळीज्यो-पोखीज्यो, मां, भौजाई अर भाई भेळै सुपनां रा न्हाना-मोटा घिरमिटिया मांड्या, आज उण

री रुखाळ सारू कोई कोनी ! पण घर तो मिनखां सूं होवै, मिनख कटै... कदे-कदे कितो अणबस हो जावै है आदमी... । रामेसर भाईजी म्हनै बाथां में भर लियो, “गूंगा ! इयां रोया करै, कीं हिम्मत राख !” म्हनै रोवतो देख पुनकी री मां रा ई बसबसिया फाटण लाग्या । रामेसर भाईजी री जोड़ायत उणनै धीजो बंधायो ।

“म्हें कदेई सुपनै में ई नीं बिचार्यो भाईजी, म्हारै साथै इयांकली होसी... !” म्हें आपनै धीजो बंधावण री कोसिस करी । रामेसर भाईजी म्हारै मगरां में हाथ फेरता बोल्या, “रामजी री मरजी आगै कोई जोर कोनी भागा ! म्हें सूरत आसूं थां कनै !” म्हें घर री चाबी रामेसर भाईजी नै झला दी, बारै सारै ऊभी भौजाई रै पगां लाग र टूटेडै मन अर तचकेडी चाल सूं टैक्सी में आ बैठ्यो... लारै-लारै पुनकी अर उण री कूकती मां... ।

पाछो सूरत आयग्यो हूं, सागी घुरसाळी में.... । उणी फ्लैट री बालकनी सारलै कमरै में डबल बेड पर आडो सूत्यो हूं, खिड़की सूं फगत आभो दीसै, आभै में सुरजी रै तीखै उजास बिचाळै तिरता रंग उडेड़ा दो-चार बादळिया । म्हारी मनगत पर उदासी छई है, आभै सूं ध्यान हटाय छत साम्हीं जोवूं, मर्यै-मर्यै चालतै पंखै री ढिबरी ढीली दीसै, जणां ई आवाज करै । आ आवाज थोड़ीक ताळ में अणखावणी लागण लागै, मन मार र उटूं अर सोचूं, काम तो करणो ई पड़सी । निगम रो अेक नवो टेंडर निकळ्योडो है, भरूं दिखाण ! दो-ढाई महीनां पछै लैपटॉप खोल्यो है । काम ई कोनी पड़्यो, सै काम मोबाइल सूं सर जावै जणा कुण माथो मारै । अै तो निगम रा टेंडर ऑनलाइन भरीजण लाग्या जणां औ बपराणो पड़्यो, नींतर दरकार ई कोनी । लैपटॉप री स्क्रीन पर अेक वालपेपर है, जिणमें तौळियासर भैरूंजी मिंदर रै पगोथियां माथै भाईजी भेळै म्हें बैठो हूं, भाईजी री गोदी में पुनकी है, बारो हाथ म्हारै डावै मोढै पर है । अेक पगोथियै हेठै म्हारी जोड़ायत बैठी है । पुनकी रो झडूलो उतारण सारू गया जणां आ फोटू ली ही । ओळ्यूं आवतां ई अेकर भळै आंख्यां भरीजगी... । पण काई बणै... !

थोड़ी 'क ताळ ठम्यो पछै काळजो काठो कर्यो, लै रै जीवड़ा, कीं काम करां । हॉटस्पॉट कनेक्ट कर र गूगल पर सर्चिंग सरू करी कै धड़-धड़ करता नोटिफिकेशन चालू होयग्या । ‘फाइव जी नेटवर्क’ में उघड़ता अै सनेसा घड़ीखंड स्क्रीन माथै चिलकै कै लारगी लार दूजो पछै तीजो, चौथो, पांचवों... जाणै होड मची होवै सै नै आपरी बात बतावण री । फेसबुक, इंस्टा, एक्स बिचाळै वॉट्सअप रो अेक दो-तीन महीनां पैली रो अेक नोटिफिकेशन चिलक्यो तो म्हारो माथो ठणक्यो । भाईजी रो वॉट्सअप अकाउंट... अकाउंट पर खुलता मैसेज... ! आंख्यां भेळै आंगळ्यां में ई करंट-सो लाग्यो । आ कियां... !

पछै चेतै आयो, लारली बिरियां जद भाईजी सूरत आया तो म्हासूं मोबाइल हैंग होवण री बात करी, म्हें बांरै मोबाइल नै लैटपटॉप सूं अटैच कर 'र फालतू फाइलां अर अपे हटाया हा, बांरो वॉट्सअप सॉफ्टवेयर ई अपडेट कर्यो हो। म्हें जाणै अलर्ट मोड पर आयग्यो, घणै इचरज सूं भाईजी रो अकाउंट खोल्यो। पांच-सात ग्रुप, कीं जाण्या-पिछाण्या नांव, 'गुड मोर्निंग', 'राम-राम सा' जिस्या मैसेज। आं रै बिचाळै अेक अणजाण-सी आइडी निगै आई, नांव मुस्कान, क्लिक करी, तो आंख्यां चौड़ी होयगी। आ के... इनबॉक्स तो भूँडै सनेसां सूं भरीजेडो... नागी-उघाड़ी लुगायां री रीलां... काम रा बिडरूप दरसाव...। अरे..., भाईजी कठै जाय 'र पज्या थे...! मनडै में अेक हूक-सी उठी अर म्हें माथो झाल लियो। दिमाग में विचारां रा भतूळिया जा चढ्या। सूलै सनेसां बिचाळै एआई सूं बणायोड़ी भाईजी री अेक फोटू... जाबक उघाड़ा... अेक चलताऊ-सी टिंगरी साथै... भूँडै पोज में... साथै मैसेज....

“इज्जत प्यारी है... दो लाख...!”

“तेरी मां देवूं आ ठगी है मुस्कान!” औ मैसेज भाईजी रो हो।

“तूं क्या कर रहा था भो... के! ...चुपचाप पैसे भेज... वरना...!”

सगळा मैसेज अेक सांस में बांचग्यो, म्हारो कल्लो सूकग्यो। म्हें आपरी आंख्यां काठी भींचली, इत्ती, कै उपरला भांपण ई कोरां उतरी गील सूं भीजग्या। पसेवै सूं हळाडोब म्हारै डील में सूळां-सी गडण लागी, अंतस में डेढ महीनै सूं घमरोळ घालता सै सवाल फगत अेक क्लिक सूं हल होयग्या। पण दिमाग में मची घरळ-मरळ बिचाळै आ तो धार ली, चायै कोई म्हनै लिपळो अर डरोकल समझै, का पछै घणो चातर, आ बात पुलिस, का किणी और नै बताय 'र म्हें म्हारै मर्योडै भाई नै दुनिया साम्हीं दूसर तो नीं मारूं!

घड़ीखंड मसां निसरी होसी, 'एमसीक्यू' जिस्यै अेक डरावणै सवाल बेताल दाई म्हारी चेतना री गिच्ची झाल ली।

“भाईजी नै कुण मर्यो?”

हनीटेप गैंग... समाजू भौ... धिंगाणै फोन दिराय 'र म्हें... भाईजी रो भोळपणो.... बिधना...

उथळो सोधतो अबार म्हें चकरी-सो चढ रैयो हूं, म्हारो मन घड़ी-घड़ी आप माथै आंगळी धरै।

आप काई सोचो...!





नीलम शर्मा

कोकिलकंठी

यो मनोरोग अस्पताळ रै जनाना वार्ड रै इंचारज रो दफतर है। जूनो-पुराणो कमरो, पण रंग-रोगन नूंवो ई हुयोड़ो हो। काठ री टेबल माथै हरी चादर, जठै काच रै नीचै सूं कीं जरूरी सरकारी कागद झांक रिया हा। च्यारूंमेर अलमाख्यां फाइलां सूं लदालद। साम्हीं नाइटेंगल अर मदर टेरेसा री फोटू देख 'र निजस्थां सूं निवण करी। निजस्था साम्हीं इंचारज मैडम।

म्हैं 34 री तो मैडम ई 36 रै अेड़ै-गेड़ै। फूठरो रंग-रूप। टमाटर-सा गाल। रसगुल्ला-सी आंख्यां। पतळा-पतळा तीरकबाण-सा होठ। आंटीदार बाळां नै रबड़ में बांध राख्या हा। कुरसी माथै घणी जच री।

“गुड मॉर्निंग मैडम।” म्हैं चनै 'क मुळक 'र बोली।

मैडम खाली कुरसी कानी सैन कर 'र बोली, “गुड मॉर्निंग। बिराजो।” मैडम रा बोल लूखा-लूखा हा।

पाछै सरणाटो।

मैडम री अळसायेड़ी रामरुमी सुण 'र म्हैं मन-ई-मन चिड़ती-सी बड़बड़ाई

:: ठिकाणो ::

मार्फत

ई.एस.आई. डिस्पेंसरी
श्री अर्जुनलाल चौधरी रो
मकान, मंगलम सिटी रै
साम्हीं, एनएच-52
सीकर रोड, जैतपुर
राजस्थान-303704
मो. 7891761801

रंग महल सूं साजन उतर्या, भोडळ रा सा भभका।

बोल्या तो बतव्याया कोनी, अर बतव्याया तो डबका।।

म्हारै थ्यावस कोनी रैयी। बोल पड़ी, “मैडम थोड़ा हंस-मुळक ई ल्यो। अठै कांई हंसणै सारू नाट है।”

मैडम चश्मा रै ऊपर सूं भुंवारा रा पट ऊंचा कर म्हारै ओड़ी झांकी अर मधरी-सी, तिरछी मुळकण रै सागै बोली, “चनै 'क थ्याई राखो। अेक जरूरी रिपोट भेजणी है।”

कीं ताळ पछै पैन रा ढक्कण नै कसती मैडम बोली, “फेरूं मनोविज्ञान री क्लास आगी दिखै। इबकै आखरी साल है नी?”

सोच समझ 'र अंदाजो लगायो हो मैडम।

म्हें मस्करी रै मिजाज सूं बोली, “ना ओ! थारी हुंसेर आयगी।”

“हूँऽऽ। पूरै बरस तो थनै म्हारी हुंसेर कोनी आई? आज बेजां आई नीं।” मीरां री बंतळ में चूठियो ई हो अर ओळमो भी।

अरे हां... म्हें थानै बतावणो ई भूलगी कै इंचारज म्हारी खास भायली मीरां ही। मीरां रा ओळमा रै उथळै में म्हें मुळक दी।

पूरो अेक बरस पाछै मिलाण होयो हो।

मीरां अलमारी झाड़ती बाईजी नै नैड़ी बुलाई अर कैयो, “बाईजी! चाय रो टैम हुयगो। चोखी-सी चाय बणा लावो नीं।”

म्हारै ई मन में चाय पीबा री बेजां हूक उठरी ही। सवेरै सूं सफर री हरात सूं माथो भच-भच करै हो। तवा ज्यूं तपै। बाईजी रै हाथ री चाय पी 'र काया में कीं सौरप बापरी। चुस्की रै सागै म्हें मीरां री वारता रो नाको फेरूं पकड़यो, “मीरां, थारी हुंसेर तो घणी ई आवै। पण काई करूं?” भूलगी राग भूलगी जखड़ी, तीन याद रैयगा—तेल लूण, लकड़ी।”

“हूँऽ थनै तो बातां में अब कुण ई जीत सकै?”

मीरां नाना टाबर री ढाळ कुरसी मचकारी ही। पाछै कीं चित्त आयो तो बाईजी नै फेरू हेलो माख्यो, “बाईजी। वार्ड रो दरूजो खोलो। बारा बजग्या। दूपैरी रो खाणो आयगो होसी। संगीता मैडम नै कैवो कै खाणा री खबर लेवै। म्हें ई अबार आऊं।”

“जी हुकम।” बाईजी फुरती सूं खूंटी सूं चाबी लपकी।

म्हे वार्ड री ओड़ी चाल्या। लोह रा सरिया रो छत तकात दरूजो। दरूजा रै साम्हीं बडो-सो चौक। अेक ओड़ी कोटड़ी। कोटड़ी रै अड़वा वार्ड। वार्ड रै पिछाड़ी बडो-सो आंगणो। आंगणा रै च्यारूंमेर ऊंची भींत। भीतां माथै कांटादार तारबंदी। बीचू-बीच टाट पट्टी बिछरी। अेर मेज माथै ताजा भोज। दूजी माथै थाळ्यां री थेह। गरम मसाला री सोरम भाळ रै सागै ई बैव री ही। सगळा मरीजां री पोसाक इकसार... आसमानी बुसर्ट अर आसमानी ई पजामो। घणकरा मरीजां रा बाळ पैरवा जता ई—“बॉय कट”।

मीरां खाणा रो जायजो लेयरी ही कै अेक जणी भाज 'र आई, “ओ... ओ... आ... ईऽऽ।”

अंगूठा सूं आंगळी मिला 'र समझाई कै थे घणा फूठरा लागो। फेर मीरां री हथेली री मैंदी री ओड़ आंख्यां सूं सैन करी, “कैड़ी फूठरी मैंदी राची है।” मूंछ्या रो सैन कर पाछै हथेली सूं हथेली मिला 'र समझाई, “थांरो बोंद थांसू घणो प्रेम करतो होसी!”

मीरां री हंसी छूटगी, “ऐंय्यां!”

बा लुगाई गूंगी भलाई ही, पण उणरी निमळ मन सूं, इसारां रै सारै कैयोडी बात म्हानै घणी देर तकात चित्त रैयी। मन री बात बिना लाग-लपेट रै कै संत कैवै कै भोळो। म्हैं पूछती, पण मीरां पैली ई बोलगी, “केसू! या सीमा है। नारी निकेतन में रैवती। चोखो-भलो गुजारो होय रैयो हो। पण जे मिनख रा मन रा बफारा बारणै नीं नीसरै तो मगज रोगी व्है जावै।”

“अरे हां! ...म्हैं तो थानै बताबो ई भूलगी कै म्हारो नाम कृष्णा है अर मीरां म्हनै लाड सूं ‘केसू’ कैवै।

“झांक केसू! बा दूबळी-सी, लांबी-सी चाळीसेक बरस री लुगाई, जकी इकसार चकरी काटरी है। उणरो नांव सविता है। थानै जाण रै घणो अचरज होसी कै बा एम.एस.सी. नर्सिंग है। इब तकात नौकरी में हुंवती तो आपणी सीनियर हुंवती। पण झांक! ...आज कठै है?”

म्हैं अेकटक मीरां नै सुण री ही। इतरा में पातिया बिछाती पैतीसां ढळती नार रै मीठा बैणां माथै चित्त गयो—या तो सुरगा नै सरमावै, ई पर देव रमण नै आवै...।

म्हारो सवाल तो बणै ई हो, “या कुण है मीरां? ई रै काई पीड़ है?”

मीरा लांबो-सो सांस खींच्यो। दो पाणी री घूट पी रै रामझारो टेबल माथै पाळो मेल्यो। म्हैं ई कान ऊभा कर लीन्हा।

“नांव है कोकिलकंठी। कोकिला ई कैय देवां।”

वाह सा! कैडो फूठरो नांव है। गुण मिलतो। नांव म्हानै घणो भायो। मीरां आगै बधी, “या धणी नै घणो चांवती। पण इणरै धणी रो भाणजो ई मामा री जान ले ली। बस, कोकिलकंठी रै सदमो लागगो। तणाव में घरां सूं नीसरगी। घण-घणेर दिन भटकती फिरी। तन रा लत्ता ई तार-तार छालणी हुयग्या। लुगाईजात है या ई भूलगी। भूखी मरती रा जाबू बैठगा। मैल सूं पट्टा री बती बंधगी। लांबा-लांबा नखां में मण-मण माटी। काया माळै दुनिया भर री धूळ लिपगी। मूंडै माथै कोरी पीळी-पीळी आंख्यां दीटै अर काळा-काळा धूळधूसर कट्या-फट्या होठां रै बिचाळै पीळांस जमेड़ा दांत। असी मैली-कुचेली बिखारण रै भेख में लोग अठै छोड रै गया हा। दुवाई-पाणी लागी। सार-संभाळ हुई, जणां जाय रै मिनखां में रळण लागी। ना आपरो अत्तो-पत्तो चित्त, ना फोन नंबर। रहण-सहण री ई पिछाण नीं रैयी। बोली तो सेखावाटी ई बोलै, गुजराती ई जाणै, हिंदी भी जाणै। कदैकाऊ ‘टीबा-खूनी’ कोई जग्यां रो नांव लेवै। गुजरात रो तो ठाह नीं, पण सेखावाटी में तो अैडो गांव है कोनी। घर-बार ई नीं हुवै तो हरेक मिनख आपरी पीछाण अर चितारां री छाप तो चावै ई है, साची है नीं?”

मीरां म्हनै विचारां रै भंवर में उळझा रै खुद उठ रै चाल पड़ी। जाणै, ई आंगणै में किती ई जीव बाळती कहाण्यां खिंडी-बिखरी पड़ी ही। इण कारणै ई अठै आयां पाछै म्हारो जीव दोरो हुयां जावै। तन रै रथ नै हांकणिया मन-मति रा घुड़ला जद बेलगाम हुय

जावै तो सुख अर सुपनां तो खुर तळै ई कुचळ'र रैय जावै। घणी-सी सुध बिसरायेड़ी लुगायां ई दरूजा सूं भीतर तो आवै, पण पाछी नी जाय सकै। आदमी फेरू ई आपरै कुटुम-कबीला में पाछा बावड़ सकै, क्यूँकै बा री मां, धणियाणी बण'र ई सार-संभाळ कर लेवै, पण लुगाई जाई री कुण सेवा करै? बाखड़ी गाय नै चारो खरचण रै तोड़ै धणी ई खूँटा सूं खोल देवै, नीतर दूध देबाळी री तो लात ई सह लेवै। बूढी-ठेरी लुगाई भी घणी नीं तो पोता-पोती नै खेलावण रै ई काम तो आवै, पण माथो ई काम नीं देवै तो मिनख काई मतलब रो? अर मतलब नी तो हे-नाता कुण पंछी रो नांव?

“आज री हाजरी तो पाकगी। उठ केसू। चाल रोट्यां रै भेळै होवां।” बा म्हारो हाथ पकड़'र खींच्यो।

सगळै दिन माथा में ‘जनाना वार्ड’ ई फिरतो रैयो अर रैय-रैयनै मीरां नै ई पाछी बटै ई ले जावूं।

“अे पौढन्या बैरण। आधी रैण ढळगी। बचेड़ी बातां काल सवेरै अस्पताळ जा'र ई बतळास्यां।” मीरां म्हारै माथै माळै हळवा-हळवा हाथ फेर्यो। या उणरी पुराणी बाण ही। मीरां दिखणै में जितरी कड़क, मन री उतरी ई नरम। ऊपर सूं खुल्ली दरीची मांय सूं सीळी-सीळी भाळ आ री ही, जाणै म्हानै कद नींद रो झोटो आयो, ठाह ई नीं पड़्यो।

संगीता सिस्टर वार्ड में साफ-सफाई करवा रैयी ही। पिलंगां माथै नूवी धूपेड़ी चादरां। साफ चमकतो आंगणो मन में सोराई लावै। इतरा में ई कोकिलकंठी री टेर सुणीजगी—“तनै अजब रच्यो भगवान, खिलौणो माटी रो...।” पण म्हानै देख'र अेकदम थमगी। संगीता सिस्टर कोकिला नै देख'र मसखरी करी, “हें ओ कोकिला! अबार ई अती फूठरी लागै, तो बाळपणा में तो काई लागती होसी, गजब ई!”

सुण'र कोकिला पैली तो लाज सूं हंस पड़ी, पाछै चनै'क बिचार कर'र बोली, “बगत गेल बदळाव तो जगत रो नेम है।

कित अम्बी कित आम, कित नद-कित समदर नीर।

ज्यों-ज्यों पलटै औस्था, त्यों-त्यों पलट सरीर।।

सै कुदरत राच्या खेल है।”

उणनै काई चितारै हुवै कै ना हुवै पण बतळाण रो सलीखो नीं भूली। बां दिनां में ई सरकार अेकर खेंचळ चलाई कै जिण लोगां रै बेमारी कोनी, चोखा-भला है, बांरो घर-वापसी रो जतन कर्च्यो जावै।

जनाना वार्ड में सीता अर कोकिलकंठी दो जणी सावळ ही। सीमा रो तो नारी निकेतन ई घर हो। मीरां दो-चार दिन लगतां खेंचळ करी जणां बटै री अफसर नै या बात ताबै बैठी कै सीमा नै कोई मानसिक बेमारी नीं है। बापड़ा जिनावर री पूंछ माथै पण मेलोगा, तो बो बिलबिलासी ही। मीरां री जवाबदारी पाछै सीमा री घर-वापसी हुयगी, पण कोकिलकंठी रो काम दौरो हो।

नूवो महीनो चालू होयो। स्टाफ री अदळा-बदळी होई। संगीता सिस्टर री बदळी कंचन सिस्टर सूं हुयगी। दुपैर में सगळो स्टाफ दफतर में हाजिर हो। मीरां सगळा स्टाफ वास्तै चाय मंगवाई ही। इण बिचाळै मीरां जिकर छेड़्यो, “कोकिला रो बी कोई गेलो हुय जावै तो मन सौरो हुय जावतो।”

मीरां री कुरसी मचकाणै री बाण भोत कोजी। अेकाअेक कुरसी रोक'र किणी खोजी री गळई आंगळ्यां घुमा'र बोली, “बा काई नांव बतायो हो गांव रो?”

बाईजी चुटकी बजा'र भुंवारा चढाय'र बोल्या, “टीबा खूनी।”

“टीबा खूनी! कैडो अटपटो-सो नांव है नीं? हूंऽऽ।” मीरां नाड़ रो झटको दियो।

फेरूं सगळा चाय री चुस्कियां में मगन हुयग्या।

“ना ओ दीदी। टीबा माणेसर खूनी अेक गांव है।”

आ ही सबसूं झटकादार अर जरूरत सारू बात। कंचन री या बात सुणतां ई सगळा रा रंग ई बदळ्ळा। आंख्यां फाटी री फाटी ई रैयगी। मीरां कंचन री ओड़ कुरसी घुमा'र अचंभा रा बळकारी भाव सूं बोली, हेंऽऽ! कठै है यो गांव?”

कंचन बोली, “यो गांव गंगानगर या हड़मानगढ रै आरै-सारै हुवणो चाईजै। म्हारै सागै बीं गांव री अेक छोरी ट्रेनिंग कर्या करती, जणां म्हनैं ठाह है।”

खोजबीण चाली। खबर पाकी हूगी। लागता थाणा में खबर करी। आठ-सात दिन पाछै अेक सवेरै दो मानवी, अेक जनानी, अेक मोट्यार पूग्या। मोट्यार री औस्था होसी चाळीसेक बरस। डावी काख में बैसाखी। छीदा-छीदा काळा-धोळा बाळ-खोपड़ी माळै। बुसर्ट कीं बेसी ई ढीलो हो, कालर माथै मैल रा लीकटा साफ दीखै हा। लुगाई सफा बोदी काया। कोरा हाड माथै सूती साड़ी। साठ बरस नेड़ै। ऊंडा-ऊंडा नैण कोटर। मूंडें में दांत कोनी अर पेट नै ओर मांयनै बड़ण री जग्यां कोनी।

अचंभा रो अंत ना पार, जद ठा पड़्यो कै बै लोग कोकिला रो धणी अर सासू हा। इब आयो कहाणी रो दूजो पाट। जिण रो बरणाव कीं इंया हो—

कोकिलकंठी री जलमभोम ही चूरू, पण रुजगार सारू गुजरात जा बस्या। बठै रामू दरजी री दुकान ही अव्वल दरजै री। सारो मोहल्लो जाणै कै कोकिलकंठी लूंठी गितेरण। रामू ई हेज में पड़्यो। दोन्यां रो ब्यांव हुयो। च्यारू खूणां ठाठ हा।

अेकर अचाणचक दुकान में लाय लागगी, जिण कारण रामू भरण-पोसण सारू टीबा माटेसर में आपरै पुरखां रा खेत बावण लागगो। हळवा-हळवा जीवन में मिठास फेरूं बापरण लाग्यो। पण अेक दिन रामू री मां जात्रा माळै अर रामू खेत माळै सज्ज। घर में कोकिलकंठी अेकली। पाछै सूं रामू रो दारूडियो भाणजो घरां आ धमक्यो। अेक तो कुजात, फेर अंगूरी ई साथ। बो पापी, मामी रो चीरहरण कर दियो। तन घायल, मन

घायल। सागै नाता ई तार-तार कर दीन्हा। कपटी भाग छूटतो, पण भाजती टैम मामा सूँ ई सांमेळो हुयग्यो। रामू कोकिला नै देखै तो चेताचूक। पळ में ई बात समझ आयगी। फेर रामू आव देख्यो नीं ताव। धर लात-धर घूसा। बो नालायक रामू रो सामनो करण नै भींत माळै पुरखां री तलवार लटक री ही। रामू री ओड़ ताणी। या देख'र कोकिला री बाक फाटगी, “अरे बाऽऽरे, म्हारा धणी नै मार दियो।” बा बेचेत हुयगी।

रोळो सुण आड़ोसी-पाड़ोसी आयग्या। रामू री जान तो बचगी, पण भाणजै रै माथै खून सवार हो। ई कारणै हितैळा रामू नै गांव बारणै लेयग्या। पाछै सूँ कोकिलकंठी री नणद मौको देख'र आपरै बेटा नै भगा दियो। जे पुलिस रै धकै चढ जावतो तो रगड़ देंवती। ऊपर सूँ जायोड़ा रा कुकरमां माथै आडो ढाळण नै भली लुगाई रै माथै ई भाणजै रै सागै रंगरैळी करण रो दोस लगा दियो।

कोकिलकंठी तो नीरी भींत हुयगी। उणनै कांई फरक ई नीं पड़ै हो कै कुण कांई कैवै अर कांई सुणै? धीरज बंधावणियो अर अपणायस बरतावणियो ई कुण? अँड़ा सुन्नपात में ई रात बिचाळै घर सूँ चाल दी।

नणद रा तो मनचाया हुयग्या—ना रवैलो बांस अर ना बाजसी बांसरी। रामू घर बावड़्यो तो घर खाली। रामू रा दिन दसा ई माड़ा हा। कोकिलकंठी नै हेरण सारू नीसरयो तो गाडी भिड़गी अर छह महीनां खाट झेली। अपंग होयग्यो—सो न्यारो।

“छोडो अक, बीती बिसार'र इब दोन्यूं नूंची पैल करो।” मीरां रामू नै धीजो बंधायो।

स्यात-घड़ी तो सरणाटो रैयो। पाछै जो इब रामू री मां कैवै ही, उणरी आस मीरां नै कतई नीं ही।

“झांको भैणजी, म्हारो दोयतो गाड़ी री टक्कर लाग'र मरगो। बेटा री कूख उजड़गी। बेटो अपंग होयग्यो। म्है इब और सैन नीं कर सकूं। ई कुभागण लुगाई नै म्है पाछी घरां नी लेय जाऊं। म्हारो सुख-संतोस सै खायगी। म्हारी ओड़ सूँ तो मरी समझो। थाणा आळा बोल्यो कै सरकारी फरमान है, जायां सरसी, नींतर म्हे अठै आवती ई कोनी। ना म्हारा बेटा नै आवण देंवती।” माताजी अंगारा उगळै।

अेकर फेरूं सरणाटो।

“चालो अबार तो पाछै मरीज रै सागैआळां वास्तै कमरा है, बटै बिराजो। काल कागज पूरती करकै पधारज्यो।” मीरां हुंसियारी सूँ काल तक बात टाळ दी। मीरां री फिकर बधगी, “केसू! दौरो जचै मामलो।”

“मीरां! यै सरकारी काज है। इयां ई चालै। कांई माथो तपावै?” म्है मीरां रै कांधे माथै हाथ राख्यो। पण मीरा हाथ झटक'र बोली, “नीं केसू! सरकारी काज कोनी। केई जिंदगियां रो सवाल है। जे कोकिला री घर-वापसी नीं होई तो उणनै कठै ठौड़? या ही चौफेरी। अर जे बारै गई भी तो कसाई भाणजै जिस्यां री कसर थोड़ी है। कै तो मर-खप

जासी कै फेरुं बावळी होय'र अठै ई आ जासी अर थनै काई लागै ? रामू नै कोकिलकंठी री दरकार नीं हुसी ? घर तो घोस्यां रा बळसी, पण ऊंदरा ई काई सुख पासी।”

आगलै दिन मां-बेटा दफ्तर रै साम्हीं ऊभा हा। कांधा माथै अेक-अेक थैला रो बोझ। मीरां नै देख'र संकोच खाय'र हळवां-सी नाड़ झुका'र रामरुमी करी। मीरां बानै भीतर बुलाया, “बिराजो। काई चाय-पाणी पीयो कै नीं ? बैठो। दो बात करां। बाईजी ! सगळं नै चाय पावो।” मीरां कुरसी थामी।

काई ठा माताजी बात सुणती कै ना सुणती ? पण मीरां रो रुतबो ई अैडो हो कै कोई बेगो-सो 'ना' नीं कैय सकै। मीरां या जाणगी कै उळझण री चाबी माताजी रै हाथां में ई है। पेपरवेट नै आंगळ्यां बिचाळै घुमावती मीरां लांबो सांस लियो अर बोली, “म्हें थारी पीड़ा समझूं माताजी। दोगता रै खोवण रो दुख है। बेटी नपूती हुयगी। पीड़ा तो उठणी लाजमी है, पण माताजी ! यां रातां रा तो यै ई तड़का होया करै। दोगता रा करम थांसूं काई छाना हा। पण बेटा रो काई बणसी ? मायत हो। कीं तो सोच्यो ई होसी ? बेटो जवान तो रियो कोनी। उमरभर री काया कसर पड़गी, सो न्यारी। कमाई है ई कठै ? थे तो आप ई अबै रामभरोसै हो। काई दूजो ब्याव करस्यो ? अबार तो थानै ई उण भोळी गाय माथै घणो रोस आ रैयो है, पण बतावो कै इण सब में कोकिलकंठी रो दोस काई है ? बीं लाण री आत्मा तो घायल पड़ी है, जम्मा मरेड़ी। रामू तन सूं लाचार अर कोकिलकंठी मन-मति सूं लाचार। मतळब, जैड़ा थे वैड़ा म्हें। अर यो रोस तो अबार ताजो-ताजो ई है। थोड़ो-घणो बगत टिप्यां पाछै थे ई बेटा री सार कर'र थाक जासो अर बेटो ई थांकी सेवा कर'र धाप जासी। फेर ? तद कोकिला घणी चित आसी। पण होळी पाछै धाबळो, मार कसम रै मूंडे। पाछै पछतावा ई रैय जासी। म्हें तो कोकिला नै बताऊं ई कोनी कै बीं रो धणी जीवै है। भोळी नै भैम है कै उणरो धणी उणनै भोत चांवतो। जींवतो हुंवतो तो जाणै काई करतो ? पीड़ा में अेक पीड़ा और क्यूं जोड़नी। बाकी तो विचार करल्यो। अजै तो बेटी बाप रै ई है, पाछै तो भलाई कागला ई उडावता रैया !”

मीरां उठ चाली।

“मीरां ! आनै कैय दे कै सरकारी हुकम है। लेय'र जाणी ई पड़सी। अै आपैई गेलै आ ज्यासी।” म्हनै रीस आयी।

मीरां मधरी-सी टेढी मुळकण सूं बोली, “हम्म। भरमायेड़ा नै गेलै ल्याओ जा सकै है, पण पटेलानै नै बांध्या गांव कोनी बसै, केसू ! प्रेम तो आपै ई सांचरेड़ो काम देयसी।” फेर बात पळटी, “अरे ! काल तो थारी ई घर-वापसी है नीं। आज तो मिल-बैठां। माथो ई भारी हो रैयो है। बेगा ई चालस्यां।”

दो-अेक घंटा पाछै बाईजी आया, “मैडम। थांसूं कोकिलकंठी रा रिस्तेदार मिलबो चावै।”

रामू थळियां में ई ऊभो रियो। दो कदम बधा'र माताजी भरुया कंठां सूं हाथ जोड़'र बोल्या, “भूल सुधारबो चावूं। कोकिलकंठी नै घरां ले जावण सारू काई करणो पड़सी, मालिक?”

मीरां संतोस री सांस ली।



फार्म नं. 4, नियम-8

पत्रिका रो नांव	:	राजस्थली
प्रकाशन री ठौड़	:	श्रीडूंगरगढ़
प्रकाशन री अवधि	:	तिमाही
मुद्रक	:	महर्षि प्रिंटर्स, श्रीडूंगरगढ़
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
प्रकाशक	:	महावीर माली
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
संपादक	:	श्याम महर्षि
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
उणां शेयर होल्डरां		
रा नांव अर ठिकाणा,		
जिणा कनै कुल पूंजी		
रा 10%सूं बत्ता शेयर है:		कोई कोनी

म्हें महावीर माली घोसित करूं कै ऊपरलो विवरण म्हारी जाणकारी अर विस्वास रै मुजब सत्य अर वास्तविकता माथै आधारित है।

महावीर माली

प्रकाशक



हरीश बी. शर्मा

राजस्थानी : लोक सूं लाइक ताई

फेसबुक सूं लेय'र यू-ट्यूब रै चैनलां में आं दिनां कैयी मीडिया इन्फ्लुएंसर राजस्थानी नै अंगेज राखी है। बै राजस्थानी में फगत बात ई नीं करै, राजस्थानी नै गांव, गाडौ, पणघट, गोबर आद सूं अळधी करता थकां ढाणी ताई अमेजॉन रै पार्सलां री डिलीवरी भी करावता दीसै। सासू-बहुवां रा लफड़ा सूं लेय'र धणी-लुगाई री बातां में हंसी रा हबोळा री खेंचळ हुवै तो किणी-किणी जग्यां सामाजिक संदेश देवणियां छोटा-छोटा आइटम लावै। लगै-टगै हजारके इस्या मीडिया इन्फ्लुएंसर है, जका आपरी जाण में राजस्थानी में परफॉर्म करै, अठै ताई कै न्यूजां भी पेस करै। लाइव भी करै अर बांनै लाइक भी मोकळा मिलै।

तथ्य री बात करां तो इणां री गिणत राजस्थानी में ओळियां मांडण आळै रचनाकारां सूं कीं बेसी ही हुवैली। रचनाकार तो स्यात अकादमी, पुरस्कार अर प्रोजेक्टां रै भरोसे हुय सकै, पण अै तो रोजीना राजस्थानी में कीं-न-कीं डाउनलोड करता ई रैवै।

चायै इणां री राजस्थानी मानक ना हुवो। बोलियां ई हुवो, पण जोड़ै तो है ही। सदा सूं जनभासा अर शास्त्रीय भासावां अळधी रैयी है। कुल-टोटल आ कै इणां री बात आम आदमी नै समझ में आवै, कोई भी राजस्थानी रो आइटम स्कॉल रो सिकार नीं हुवै, औ जतावै कै मैणत तो हुय रैयी है।

:: टिकाणो ::
कुसुम कुंज, बेणीसर
बारी के बाहर, सूर्य
कॉलोनी, बीकानेर
(राजस्थान) 334004
मो. 9672912603

मान्यौ कै आ राजस्थानी आपां नै हंसावै तो है, पण इण बात नै भी मानो कै भासा री पीड़ सूं नीं जोड़ै। मान ली। पण इण में इणां री चालाकी सोधण री दरकार नीं है। हुय सकै कै इणां नै ठा ई नीं हुवै कै राजस्थानी रै वास्तै सरकार रो कांई सोच है। हुय सकै चुटकला करण आळां नै इण चिं ता रो ठाह ई नीं हुवै। इणां

नै इणसूं बेसी कीं ठा ई नीं हुवै कै राजस्थानी में बतळ करां तो लाइक अर कमेंट बधै। रीच आपुआप सिरै चढ जावै। राजस्थानी री एल्गोरिदम मोकळी। इस्या लोगां नै काई तो ओळमा देवां।

तो पैली बात के उणां नै ठा कियां पडै?

इण पर बात करणी है। पण पैली विसै सूं सरू करूं।

सोशल मीडिया री आपरी अेक सबदावळी है। अठै लाइक रो अरथ तीन-च्यार तरीकै सूं लिरीजै। अेक सबद है हम्म। औ भी निरवाळी व्यंजना देवै। जियां लाइक सूं किणी भी पोस्ट री लोकप्रियता रो अंदाजो लगावणो अबखो है, उणीज तस्यां लोक रै चावै अरथ नै इण लाइक सूं जोड़नो इसी खेंचळ है, जकी लोक रै अबार ताई रै अरथ रो नुकसाण कर सकै। लाइक रो आपरो लोक है, लोक सूं लाइक ताई रो साव न्यारो। फोरलाइन सड़कां पर चालण वास्तै जियां गाडियां रा नेम-कानून हुवै, इणनै भी इयां ईज समझणो पड़सी।

जे ओ सुपनो है कै लोक रो मारग लाइकां में जाय'र रळ जावै तो कैय सकूं कै राजस्थानी री सिमरधी में इणसूं बेसी कीं नीं हुय सकै। जे आज रो समै राजस्थानी नै कीं देय सकै तो इण सौगात सूं बेसी कीं नीं हुय सकै, पण जिणनै आपां आधुनिकता सूं समझां, जिणनै आपां आज री टैक्नोलॉजी सूं समझां, जिणनै आपां सोशल मीडिया सूं समझां उण में बरतीजण आळी राजस्थानी अर भाषा, साहित्य कै संस्कृति रै पेटे रची-बसी राजस्थानी में फगत जमीन-अकास रो फरक ई नीं, उद्देश्यां में भी है।

औ लोक आपां री ग्यान-परंपरा रो लोक नीं। इण लोक में रीच रो गणित है। एल्गोरिदम रा फलसफा है। लाइक अर कमेंट रा नंबर है। सोशल मीडिया रो निरवाळो लोक है, पण इणनै नकारणो सौरो नीं है। जे नकारियाँ तो इणी सूं संस्कारित पीढी कैय सकै कै म्हां तो इणी नै राजस्थानी मानां। अर जे इण लोगां नै आपरी करणै सूं नीं बरजां तो बरसांबंद रो आंदोलन फेर दिसा-भरम रो सिकार हुय सकै। सोशल मीडिया पर सेलिब्रिटी बण चुक्या लोगां नै शास्त्रीयता अर सिद्धांतां में बांधणो घणो अबखो काम है। जिकां रा फैस अर फॉलोअर अणगिणत है, उणां नै साधणो बडी टास्क है।

...तो सवाल औ है कै इण काम नै कुण करै?

सोशल मीडिया नै अरथावां तो इण रो अरथ आवै सामाजिक माध्यम। पण किणी भी भासा सूं बीजी भासा में जायां जियां सबदां रा अरथ माड़ा-मोटा छंग जावै, इण सागै भी हादसा हुय सकै। फेर काई अड़ी है कै आपां सोशल मीडिया नै अरथावां। औ तो लारला बीसेक सालां में समूचै मुलक नै ई अरथाय चुक्यो है। सत्ता रा समीकरण बदळण आळो सोशल मीडिया अब आपनै आप में अेक सत्ता है। लोकतंत्र री परिभासा रै नेड़ै-तेड़ै। तो इणनै इणी रूप में समझां तो समझण में सोराई रैसी।

संदर्भ है राजस्थानी अर बात है लोक सूं लाइक ताई री।

तो सोशल मीडिया री राजस्थानी इण वास्तै महताऊ है कै इण सूं प्रवासियां रै मन में मां अर माटी रै वास्तै भाव जागै। नोस्टेल्लिज्या पनपै। आपरी भासा में रीलां देखनै अपणापै रो औसास हुय सकै। इण सूं इणां री रीच बधै। राजस्थानी ग्लोबल हुय जावै। आखी दुनिया में पूग सकै, पण पूगै फगत राजस्थानियां ताई, जे किणी नै यूं लागै कै राजस्थानी भासा नै बीजी भासावां समचै खड़ौ करण में इण रीलां रो कोई रोल हुय सकै तो इणनै सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स नै अंधारै में राखण री सूक्ति सूं बेसी कीं नीं मान्यो जाय सकै। घणै सूं घणौ रीच रा आंकड़ा राजी कर सकै, पण इसी रीच रो काई बटै, जकै नै देखण-सुणण रै पछै अेक भी राजस्थानी भणन नै प्रेरित नीं हुय सकै।

कैय सकूं कै आज जटै आपां खड़ा हां, आपां री राजस्थानी रै वास्तै निष्ठा, समर्पण अर आहूति रै ऐनाण सूं साव अपूठी खड़ी है सोशल मीडिया री राजस्थानी, जकी में पाग पैरिया मिनख अर ओढणा ओढ्योड़ी लुगायां राजस्थानी नै इण वास्तै बतौर भासा परोट राखी है कै वै मोनोटाइज हुय सकै। कमाय सकै। मतलब साफ कै राजस्थानी रो बजार है। सोशल मीडिया री भासा में बात करूं तो एल्गोरिदम में राजस्थानी उठण लागी है।

पण इण एल्गोरिदम नै 'राजस्थानी री, राजस्थानी वास्तै अर राजस्थानी में सूं' समझणी चाईजै। राजस्थानी भासा रै आंदोलण, खासतौर सूं बीजी भासावां रै साम्हीं खड़्यै करण रै जकै जज्बै सूं रचनाकार केई साल सूं आफळ कर रैया है, बांनै इण एल्गोरिदम सूं कोई फायदो नीं हुवणो है। कह सकूं कै राजस्थानी रो जको रूप-सरूप बणावण नै पुरखां आपरी जूण खपाय दी, उपरै बधापै सारू इण रीलां रो वरतमान निजर नीं आवै। भविष्य कीं बण जावै तो बाद री बात।

लाइक रै रोळै में राजस्थानी

आप सोचो कै अेकै कानी तो आपां राजस्थानी री अेकरूपता वास्तै सबद-सबद पर विचार कर रैयां हां। आपां राजस्थानी रो भंडार सिमरध करण सारू साहित्य री हर विधावां अर विमर्सां पर बात कर रैयां हां। इण बात रा पडूतर तयार करां हां कै भासा नै संवैधानिक मानता मिल जासी तो कियां विज्ञान, तकनीक अर दूजै आयामां में आपां री भूमिका ओपती रैसी। आपां राजस्थानी भासा रो विश्वकोश बणावण में लाग्या हां कै कदास कोई पूछै तो बताय सकां भासा री सिमरधी। इस्यै में चुटकला सूं राजस्थानी रो कोई भलो नीं हुवणो है। राजस्थानी बोलता थकां हुवण आळै हास्यबोध नै कम करण वास्तै राजस्थानी रा रचनाकार जकी खेंचळ लारलै पचास साल में कर रैया है। उण गंभीर हुंवती राजस्थानी नै इणां सूं कोई छोटो-मोटो फायदो हुंवतो भी नीं दीसै। हां, इणां नै जे आ गंभीर-सोच मिल जावै तो सोनै में सुगंध।

...अर जे किणी नै लागै कै इस्या लोगां सूं राजस्थानी रो आंदोलन मजबूत हुय जासी तो असफळता री गिणत में अेक बिंदु रो इजाफो ई हुवणो है। हां, इणां रो उपयोग करियो जाय सकै।

फेर जे औ विसै है, तो इण चिंता सूं कम सूं कम आयोजक तो वाबस्ता है ईज कै ध्येय सूं भटकै राजस्थानी रा सगळी हिमायती जे अेक सागै हुय जावै तो अेक अर अेक इग्यारै होय सकै। इसी स्थिति में इण मीडिया इन्फ्लुएंसरां रा मूल ध्येय पईसा कमावण सट्टे राजस्थानी नै अंगेजण कै अंवेरण री बात नै मानता थकां भी जे आपां इण बात वास्तै इणां नै तयार कर सकां कै बै हिडन-एजेंडों राजस्थानी री मानता रो राखै तो बडो काम हुय सकै। क्यूँकै इणां रा अणूता फैंस-फॉलोवर्स हुवै। म्हें हमेस कैया करूं कै राजस्थानी भासा री मानता रो आंदोलन इणी वास्तै फ्लॉप हुयो कै इणरी बागडोर लेखकां अर अध्यापकां रै हाथ में है, जका में सूं घणकरा किणी-न-किणी रूप में सरकार सूं बंध्योड़ा हा अर जकां सागै जनता भी नीं। या तो नेता हुवै, जका आंदोलन चलाय सकै या पछै इण तर्यां रा सेलिब्रिटी, जकां री बात नै जनता सुणनी चावै।

जे अै मीडिया इन्फ्लुएंसर मानता री अलख जगावता थकां, छोटी-छोटी बातां सूं भासा री मानता मिलणै रा फायदा गिणावण लागै तो वातावरण बणनौ सरू हुय सकै। इणरै वास्तै प्रबोधन री प्रक्रिया महताऊ है। ‘कुण करै’ रो सवाल तो पैली सूं ई साम्हीं है।

अै लोग राजस्थानी साहित्य री बात करै। आंदोलन री बात करै। जियां सरकार आपरै सरकारी विचार अर संदेशां नै प्रसारित करवावै, उणी तर्यां राजस्थानी बोल’र पईसा कमावणियां इन्फ्लुएंसर्स नै नैतिकता रै तकाजै राजस्थानी वास्तै माहौल बणावण री अरज करी जाय सकै कै बै कोई बडै नेता सूं मिलै, बडै मंच पर जावै कै कठै इंटरव्यू आद देवै तो राजस्थानी री विसालता, विपुलता अर मानता री बात करै।

जे इयां हुय जावै तो सोनै में सुगंध। भलां ई आपां नै राजस्थानी भासा री संवैधानिक मानता रा प्रवक्ता नीं मिलै, प्रचारक तो मिल ई जावै। इणां में ई जे कोई प्रवक्ता बण जावै तो और ई चोखी बात।

कैय सकूं कै राजस्थानी रै लोक सूं राजस्थानी नै लाइक रै बीच अबार कोई तल्लो-बल्लो नीं है, पण जे इण दिसा में गंभीर काम कर्ह्यो जावै तो बात बण सकै। जद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोशल मीडिया रा इन्फ्लुएंसर्स सागै बैठनै बात कर सकै अर बताय सकै कै थानै इण सब रै सागै इतो-इतो देस रै वास्तै भी करणो है तो क्यूं नीं राजस्थानी रा इन्फ्लुएंसर्स नै अेक कार्यशाला मुजब बुलाणै री बात करी जावै। हुय सकै उणां नै अबार ताई इण बात रो ग्यान ई नीं है कै जकी भासा उणां री रोजी-रोटी है, उण भासा नै उणां री किती जरूरत है।

इण बात सूं कोई इनकार नीं है कै वातावरण निर्माण में इणां री भूमिका महताऊ है, पण इणां नै ठा ई नीं है कै अँ काई कर सकै।

हुय सकै कै इणां रा कंटेंट गंभीर नीं हुवै। बजार री मांग सारू इणां नै आपरी स्क्रिप्ट में ई एल्गोरिदम रो ध्यान राखणो पड़ै, पण आ ईज तो जरूरत है। इणां रो प्रोफेशनल हुवणो ईज भासा री मानता रै आंदोलन रो मजबूत पख है। हुय सकै कै अँ आंदोलन रा हरावळ नीं हुय सकै, पण आंदोलन नै जगावण में इणां री बडी भूमिका हुय सकै।

अँ आपां ईज तो हां जका कैया करता कै आपां री भासा कनै पंजाबी या भोजपुरी भासा में काम करण वाळां जिस्या कलाकार नीं है। अब है तो इणां री भूमिका तय करणी चाईजै। लाइक रो लोक आपां रै लोक अर शास्त्र री बीच सूं अँ नूवो मारग चावै, देय दो। इण मारग नै फगत स्वीकारणो ई नीं, बणावण वास्तै भी तयार रैवणो पड़सी। आछी बात है कै अँ आपरै वास्तै नूवो मारग चावै। चालण दो। मानो कै अँ मदमस्त हाथी है। आपरी धुन में चालसी। आपां रो काम फगत अंकुश लियोडै महावत रो सो हुवै, जको समै-समैसर इणां नै रस्तेसर चलायां राखै।

म्हारै कनै इण तस्यां रा केई दाखला है, जकै में सोशल मीडिया पर काम करणियां लोगां नै राजस्थानी में चोखी स्क्रिप्ट नीं मिली। फिलमां अर ओटीटी प्लेटफारम पर काम करणियां नै इस्या रचनाकार चाईजै, जका कीं नूवो देवै, उणां री इमदाद जरूरी है। जे औ सगपण हुय जावै तो राजस्थानी रो भलो तो हुयसी ई हुयसी, नाम अर पईसा-टक्कां रो सरतन भी बैठसी।

कोई बडी बात नीं है कै जे इणां नै तयार स्क्रिप्ट मिलै, कवितावां री ओळियां मिलै, सूक्तियां मिलै तो राजी-राजी अंवेर लेसी। पण इण बात रो ध्यान राखणो है कै अँ राजस्थानी रै आंदोलन री मुख्यधारा रा जातरी अबार नीं है। 'लोक सूं लाइक' री जात्रा नीं है। लोक री जात्रा अलायदी है। लाइक रा मारग अलग। आपां नै फगत इण बात रो ध्यान राखणो है कै जियां सगळी नदियां समदर में जाय र मिलै, उणी तस्यां राजस्थानी री बात करणियां हर लेखक, स्कॉलर, एक्टीविस्ट चायै सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हुवो, सगळां रो ध्येय अँक ईज हुवणो चाईजै कै किणी तस्यां सूं आंदोलन नै मजबूती मिलै।

छेकड़ में इण बात नै मानणी चाईजै कै अँ आपां सगळा फोरलेन सड़क पर चाल रैया हां। भारी अर हळकी गाडियां वास्तै लाइणां बणी है, पण सगळां री मंजिल अँक है। राजस्थानी नै मिलण वाळै अँक लाइक री कीमत भी बिती ई है, जिती राजस्थानी री किताब खरीदै। इण बात नै सकारात्मक तरीकै सूं समझां तो राजस्थानी नै सार्थक परिणाम मिलैला।





दीनदयाल शर्मा

बिना टिगट जात्रा री सजा

आ नौवें दसक री बा घटना है, जकी आज भी ओळ्यूँ रै अलबम मांय इयां चमकै ही जाणै पुराणै कैमरै री फ्लैश आंख्यां में अंजस भरै ही। फरक फगत इत्तो ई हो कै बीं फ्लैश रै साथै दिल री धडकणां भी दुगुणी हुज्यावती। घटना अेक रेल जात्रा री है। आ कोई साधारण जात्रा कोनी ही। औ ‘आतमा रो इम्तहान’ अर ‘हिम्मत री असलियत’ जाणनै रो प्रयोग हो। प्रयोग भी अैडो, जिणमें प्रयोगशाला रेलवे टेसण हो, उपकरण अेक चालती रेलगाडी अर विषै वस्तु ही—म्हे दोनूं भायाला।

घटना इण तरियां सरू होई कै म्हैं अर म्हारो अेक कवि मिंतर सारलै सहर श्रीगंगानगर मांय होवण आळै कवि सम्मेलन में शरीक होवण सारू गया हा। बठै पूग्या तद देख्यो कै सम्मेलन रो माहौल भौत ही गुमेज करण आळो हो। मंच माथै गंभीर कवि अर नीचै बैठ्या बां सूँ ई गंभीर श्रोतागण। कवितावां रै बीच-बीच मांय ताळ्यां री आवाज साबित करै ही कै श्रोता जाग रैया है।

म्हे दोनूं भी बठै आप-आपरी साहित्यिक विद्वता दिखाई। कीं शे’र कैया, कीं हास्य रस री बातां सुणाई अर दो हास्य कवितावां सुणा’र श्रोतावां री ताळ्यां बटोरी।

कार्यक्रम देर ताई चाल्यो। कार्यक्रम जद खतम हुयो तद म्हारै भीतर रो साहित्यकार तो स्यांत हुयग्यो पण घड़ी देखतां ई भीतर रो जात्री जागग्यो। घड़ी म्हानै देख’र घबरावती-सी दिखै ही। कारण कै हड़मानगढ जावण आळी रेलगाडी रो टैम किनारै माथै ई हो। गाडी जावण आळी ही। म्हे दोनूं भायला टेसण कानी इयां भाज्या जाणै मैराथन में भाग ले रैयां हां। रस्तै मांय भाजतै-भाजतै भायलै कैयो, “चिंत्या ना कर। सौ-कीं ठीक हुयसी।”

:: ठिकाणो ::
‘टाबर टोळी’

10/22, हाउसिंग बोर्ड
कॉलोनी, हनुमानगढ़ जं.

(राजस्थान)

मो. 9414514666

“सौ-कीं ठीक हुयसी” सुण’र म्हनै इयां लाग्यो जाणै इम्तहान री बिना त्यारी आळै छोरै नै कोई दिलासा देवण लाग रैयो है, कै कोपी में कीं-न-कीं लिखियाई, कोपी खाली ना छोडी। पास हुज्यागो।

म्हे जियां ई टेसण पूग्या। रेलगाडी सीटी देय दी। गाडी अबै होळै-होळै टेसण सूं सरकण लागरी ही अर बीनै म्हे दोनू जणां रेलगाडी नै पकड़ण सारू ज्यान री बाजी लगा रैया हा। टिगट लेवण रो टैम कठै हो! म्हारै कनै दो विकल्प हा। अेक तो ओ कै लारली गाडी नै अडीकां अर दूजो औ हो कै चालती गाडी में चढ ज्यांवां।

भायलो खुद गाडी में चढतो बोल्यो, “देखै के है, बेगो-सो चढज्या।” म्हें भी हिम्मत कर’र गाडी में चढग्यो। सांस फूलगी। काळजो धक-धक-धक-धक करै हो। सोच्यो, कै जे गाडी में नहीं चढीजतो तो राम-नाम सत हुज्यावतो! जदी भायलै मेरै कांधें माथै आपरो सज्जो हाथ राखतां थकां कैयो, “घबरावै क्यूं है, म्हें हूं नीं!”

आ सुणी, जद कीं सांस में सांस आयो। म्हे अेक सीट माथै बैठग्या। सीट माथै बैठतां ई काळजै में ओ डर सतावण लाग्यो कै आपां तो बिना टिगट हां। जे टीटी आयग्यो तो काई कैयसां!

बीं टैम हरेक काळै कोट आळो आदमी म्हनै टीटी लागै हो। गाडी जठैई रुकती, इयां लागतो जाणै टीटी अबकाळै ई डब्बै मांय आयग्यो दीसै। अेकर जियां ई म्हनै काळै कोट आळो अेक आदमी दिख्यो, म्हें उणनै टीटी समझ’र टॉयलेट मांय घुसग्यो।

म्हारै भायलै रो आतम विस्वास सांतरो हो। बोल्यो, “डर ना। तूं आपरो मूंडो इयां राख, जाणै आपणै कनै टिगट है। जातरी रो मूंडो देख’र ई टीटी पतो लगाल्यै कै ई कनै टिगट है कै कोनी। घबरा ना। हिम्मत राख।”

भायलै री बात रो थोड़सीक ताळ तो असर हुयो, पण पछै मेरी घबराट बधगी। इण घबराट मांय म्हें हड़मान बाबै रै सवा पांच रिपियां रो परसाद ई बोल दियो।

भायलै भळै हिम्मत बंधाई। बोल्यो, “अरे बावळा! डर ना। आपां साहित्यकार हां। आपां सबदां सूं काम चला लेस्यां।”

म्हें सोच्यो—सबदां सूं टिगट कियां बण जासी। घंटैभर री जातरा ही। आधो रस्तो तो कटग्यो। अबै आधो घंटो कढणो मुस्कल हुय रैयो हो। अबै ई इयां लागै हो टीटी आय’र सगळां रै सामनै फीत उतारसी। कठैई जेळ हुयगी तो नौकरी भी जावैगी। म्हें सगळा देवी-देवतावां नै याद करण लागग्यो अर मन-ई-मन सौगन खाई कै आईदा कदैई बिना टिगट रेलगाडी में जातरा कोनी करूं। हे भगवान, अेकर-अेकर बचाल्यो!

रेलगाडी अबै चालती-चालती कीं होळै हुयी। पतो लाग्यो कै हड़मानगढ आ रैयो है। आखिरकार मंजल आयगी। रेलगाडी रुकी। म्हें भायलै कानी देख्यो। भायलै आंख्यां-आंख्यां में म्हनै हिम्मत बंधाई। म्हें राहत री सांस ली, कै चलो आपणो अेरियो आयग्यो।

पण जीवण में राहत इत्ती चटके कोनी मिलै। जियां ई म्हे दोनूं टेसण सूं बारै जाण आळै गेट कानी पूग्या। आवाज आई, “अरे, जरा रुकना!”

मेरा पग तो बटैई जाम हुयग्या। पगां सूं जमीन खिसकती-सी लागै ही। आ, बा ईज आवाज ही, जकी रो म्हनैं पूरै रस्तै डर लागै हो। आ टीटी री आवाज ही।

टीटी म्हानैं कैयो, “टिकट दिखाओ!”

मेरी जबान तो जाणै ताळुवै रै चिपगी। बोलीज्यो ई कोनी। भायलो आतमविस्वास रै साथै बोल्यो, “टिगट क्यांरी, म्हे तो अठै टेसण माथै घूमण आया हां।”

टीटी बोल्यो, “तीन बजे रो टैम है। औ कोई घूमण रो बगत है?”

मेरै दिल री धडकण बधगी। म्हें सोच्यो— टीटी ठीक कैवै है। तीन बज्या है। रात रै बखत टेसण माथै घूमण नै कियां आ सकां। ओ कोई पारक थोड़ो ई है।

टीटी म्हारै कानी शकआळी निजरां सूं देखतो बोल्यो, “इत्ती रात नै! टेसण माथै घूमण नै आया हो!”

उणीज बगत अेक और टीटी आयो अर मेरै कानी देख'र हाथ जोड़ता थकां बोल्यो, “नमस्कार, गुरुजी।”

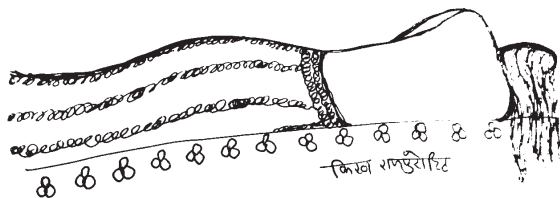
म्हें देखतो ई रैयग्यो। फेर सोच्यो—ओ टीटी स्यात अठै मोटोडै स्कूल मांय मेरै कनै पढ्योड़ो दीसै। म्हें बीरी पीठ थपथपाय'र आसीरवाद दियो।

भायलो होळै-सी बोल्यो, “म्हें कैयो नीं, कै सौ-कीं ठीक हुज्यासी।”

म्हें सोच्यो—औ ठीक होवणो कोनी। औ तो चमत्कार है।

बीं दिन म्हे दोनूं बचग्या। पण बीं दिन ई म्हें संकळप लियो, कै चायै कीं हुज्यावै, बिना टिगट जातरा कदैई नीं करूंला।

म्हे बच तो गया, पण घटै भर री जात्रा री बगत जकी म्हें सजा भुगती, बा मेरै खातर भोत बडी सजा ही, बींनै म्हें आखी जिनगी भूल नीं सकूं।





डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

बुद्ध! खुद सूं खुद रो जुद्ध

जसोधरा !
अंतस रै आंगणै
अधरात
अकटक
किणनै उडीकै ?
उडीक रै ई व्हेती व्हेला
कोई मांठ
कोई सींव
जठै
सपनो अर साच
अक दूजा सूं न्यारा लागै ।

जसोधरा !
थारो अर उणरो
मारग ई न्यारो
बावळी !
थूं बांधै—
जलम-जलम रा बंधण में
वो सोधै—
जलम-जलम सूं
अक अदीठ
मुगती रो मारग
थूं अजै क्यूं उडीकै ?

जसोधरा !
थारी ऊजळी दीठ में
जुग रो दरसाव
प्रीत रो पसराव
पण प्रीत में प्रीत कठै ?
अजाण मत बण
जाणै तो थूं ई है—
विजोग रै अंतस में बसै
असल सुरंगी प्रीत
मुगती रौ मारग ।

जसोधरा !
जीवण रौ साच
जीवण सूं न्यारौ क्यूं ?
अंतस में है
पीव रौ उणियारो
पण विजोगण जमारो ?
इत्तो सौरो कठै ?
संसार में बणणो—
बुद्ध !
साचाणी
पैलां जीतणो पड़ै
खुद सूं खुद रौ जुद्ध ।

:: टिकाणो ::
थर्ड ई/2, शिक्षक कॉलोनी
ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.) 342001
मो. 9928418822

अमावस रो चांद

अे चांद !
भरम रै भणकारै
थूं भलाई
आखी दुनिया नै भरमावै
प्रीत रै परवाणै—
अंतस हेत जगावै
मधरी मुळक, अर
सुरंगा सुपना रै समचै—
सकल सृष्टि नै सरसावै
पण म्हारो जीव
इण बात सूं दुख पावै
साची-साची बता
थूं ! अमावस नै कठै जावै ?

पाणी रो पत

पाणी कैयो—
कोयला !
मनोमन क्यूं पछतावै ?
अेक छिण
म्हारै कनै आव
म्हैं थनैं ऊजळो कर देवूं ।

कोयलो पडूतर दियो—
पाणी !
म्हैं ऊजळो कर्यां
थूं खुद, काळो पड़ जासी
जद म्हैं थारा लखण कोनी लेवूं
तद थूं
म्हारो रंग क्यूं लेवै ?

पाणी रो पत
जीवण रो सत
काळस धोय रै ई
निरमळ
निस्छळ रैवै
माणस !
कोयला री करड़ाण
पाणी रा लखण नीं लेवै ।

प्रीत परणीजै

अठै परंपरा-नेगचार
लेण-देण
काण-कायदा
सूंण-अपसूंण
सगाई-दस्तूर
ब्यांव रा सैं कारज
बकायदा टीपणो देख रै
अगन री साख में
लाड-कोड सूं संवरीजै,
तो पछै
सोरठ-बींझो
जलाल-बूबना
नागजी-नागवती, अर
मूमल-मेंदरा जैड़ा
प्रेम-प्रणवीर
जगत में क्यूं गरबीजै ।

सो कोई
पीळा चावळ बांट रै
अगन री साख में
गठजोड़ो भलाई बांधै
ब्यांव री बाण भलाई राखै

पण उण बड़बूझागड़ नै
आ कुण समझावै, कै
प्रीत
चंवरी में कद परणीजै !

पणघट री प्रीत

पणघट !
नित निहारै
मिरगानैणी रै
नैणां में घुळियोड़ी
नेह री राती डोर नै
नित सरावै—
कजरारै नैणां री कोर नै
अस्सी कळी रै
घाघरियै रा गेह नै
रूप-रूपाळी, चित्त-हरणी
गजबण री सुघड़ देह नै ।

कियां बोलै ?
अबोलो पणघट
नित सपन संजोवै
करड़ै झांझरकै उठ
बावळो
अपलक बाठां जोवै
थारै पसरेवां सागै
अकमेक हुयां
आणंद उमंग सूं अंजसै
पण
प्रीत-बायरी पणिहारी
कद समझै ?
पणघट री प्रीत ।

प्रीत-सैनाण

बिणजारा !
थारी बाळद माथै बळिहारी जाऊं
भरिया है— हीरा-पन्ना, माणक-मोती
अक अक सूं इधकी
जींसा रो अकूत खजानो
पण काम रौ कांई ?
निरमोही ! अकर खुद नै जाण
जीवण कठै गमायो ?
साचाणी— जीवण रो हाण ।

बिणजारा !
म्हारै हियै बसी है, चित्त चढी है
थारै प्रीत री चितार
बाळद बिचाळै बैठी
अणमणै मन सूं निरखूं हूं—
म्हारै अंतस रै आंगण
थारी ऊजळी प्रीत रा
साचकला सैनाण ।

प्रीत-संगीत

थारी जबरी धणियाप
जगत में बाजै
अकूत-अखूट खजानै रो धणी
पण इतरौ क्यूं इतरावै
किण सूं कांई छांनो
आज मांडणो पड़सी-
खरो-खरो म्यानो ।





योगेश राजस्थानी

म्हारी कविता

म्हारै हिवडै री
अणबोल आस है
गूंगै री खणकती
आवाज है
म्हारी कविता ।

अधूरै सुपनां सारू
उजास है
माटी रो हिंवळ्यास है
हारती हिम्मत रो
विश्वास है
म्हारी कविता ।

रंग देवै मरुभौम नै
हरियल,
करै बाळू रंग नै ऊजळ
गोडावण-सी चपल है
म्हारी कविता ।

:: ठिकाणो ::
डागा चौक
बीकानेर (राजस्थान)
334005
मो. 8302242401

मां'सा री लोरियां
बाबोसा री थपकिया
चंदा मामो अर
उणरी कहाणियां है
म्हारी कविता ।

टूटते तारै रो अरमान
उडती चिड़कली रो
परवाज
पंच भूतां रो सम्मान है
म्हारी कविता ।

म्हारा मुळकता
हियै रा बोल
मिसरी सूं मीठी
अणमोल
बाजती प्रभाती री
रमझोळ है
म्हारी कविता ।

सरस्वती रो ज्ञान
विष्णु रो ध्यान
बंसरी री मीठी तान है
म्हारी कविता ।

आभै री झणकार
जीवण री मनवार
तो कदै तलवार है
म्हारी कविता ।

ओळू

जद भी
म्हारै चोफेर
आय बैठ जावै
अंधारो, अर
म्हनेँ डरावै, धमकावै
कर देवै जी नै
आकळ-बाकळ
उण बगत
थारी ओळू म्हनेँ
जगावै, समझावै
बुचकारै, मनावै
लड़ावै अर ओढावै
नेह उजास री चांदणी ।

कवितालेख

म्हें रोज करूं खेंचळ
सबदां सूं
मांडण सारू
अेक कविता
पण नीं पडै पल्लै
आं सबदां री
खेंचळ मांय
कठै गम जावै
आखर माथै सूं
भावां री छाप
छेकड़ लेवण लागै
कविता
तकमो आलेख री ।

आखर

सत री जोत जगावै आखर
मन रा जाळ हटावै आखर
सूखै बंजर खेत मांयनै
हरिया रूख लगावै आखर
तपती बळती बाळू माथै
सीळी छांव लखावै आखर
थारी-म्हारी राड़ हुवै जद
कविता बणै, मनावै आखर
सोय रिया ज्यो नींदळी में
बांनै झाल जगावै आखर

बातां

आव करां फागण री बातां
हेत हियै लावण री बातां
दौरो-सौरो दिन निकळ्यो
रात करै खावण री बातां
ना थूं सूती, ना म्हें सूतो
नैण झरै आवण री बातां
लागै उणनै सपना जैड़ी
दोय टैम खावण री बातां
पेट भर्यां पाछै ही सूझै
भावण नीं भावण री बातां
थां बिन रूख सूखग्यो गोरी
यां में कीं पावण री बातां
कियां चालसी घर रो गाडो
अै तो है सोचण री बातां
भेळो करियां पार पडैला
पर्यां बाळ खरचण री बातां





बबिता कुमावत

ओ नारी!

ओ नारी ! थारी मैणत सूं
या धरती भी सुरग बण जावै
थारी हिम्मत अर लगन सूं
बंजर में भी फसल उग जावै

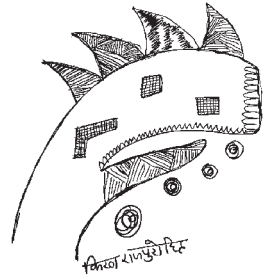
नारी रो त्याग अर बळिदान
किताबां में लिखणो चाईजै
ज्युं समाज सुणै थारी गाथा
माण थारो बधणो चाईजै

नारी है सिरजण रो विस्तार
थारै बिना सूनी दुनिया सगळी
संघर्षा री सूरत थारी
हाथां में थारै हिम्मत भारी

थूं भोर रा उजास सूं जागै
निंदङली आख्यां सूं भागै
ओ नारी ! खेतां की राणी
थारो रूप अनोखो लागै

:: ठिकाणो ::
सहायक प्रोफेसर
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय
नीमकाथाना (सीकर)
राजस्थान
मो. 9928291605

ना थूं थाकै अर ना ई रुकै
कांधा पर हळ रो बोझ राखै
अपणा दुखड़ा कनै ना राखै
जीवण रो थूं सेतु बणावै



पसीनो थारो मोती बण जावै
धरती में ज्यूं बीज रुपावै
थारी मैणत री सौरम आवै
धूप तपै अर लू बळ जावै

सांझ पड़्यां जद घर आवै
बाळकां री भूख मिटावै
धरती री थूं साची दुलारी
जीवण रो संकळप जगावै ।

झाळ नारी री

आज आकासां में मौन क्यूं छायो
आज माटी रो रंग क्यूं फीको होयो
कुण नारी रा माण सूं खेल्यो
क्यूं आज समाज यो गूंगो होयो !

क्यूं थूं चुप रहबा की ठाणी
ई धरती रा धारां आळी
जद चीरहरण व्है नारी रो
फेर क्यूं थारी आंख्यां में पाणी !

थारी आवाजां जकड़ी घूँघट में
मांय-मांय थूं रोवै है
पीड़ा री घणी ज्वाला भड़कै
पण कहबां में थूं डरै है !

कदै थूं जळै दहेज री आग में
कदै लोभ री बेड़्यां बंध जावै
कदै भेड़िया हवस रा खावै
मानवता रो सिर नीचो व्है है

समाज थारी या रीत कैड़ी ?
जीवतै-जी अपमानित व्है है
या जीवण दियो दुनिया नै
ई रो ही अस्तित्व खोवै है

सगळा जागो अर आवाज उठावो
अन्याय रै सगळा खिलाफ लड़ो
नारी रो माण बचाणो है
संवेदना रो दीवो जगाणो है ।

म्हारी दुनिया

थारो मौन भी घणो कह जावै
थारो तो मुळकणो भी ज्ञान रो दीप जगावै
भविष्य रा नक्शा में जद म्हें देखूं
म्हारो मन भी गरब सूं भर जावै

थारा हाथां में चौकां री लकीरां
म्हानै मन-ही-मन सुकून दे जावै
थारो बोलण रो तरीको
म्हारो तो मन मोहित हो जावै

थां केवल मास्टर नीं
म्हारै जीवण रा मार्गदर्शक हो
थांरें में बसी म्हारी दुनिया
थां तो अपणायत री नाड़ी हो

थां जिंदगी रा हर गेला पर
साथै खड़्या मिल्या हो
थांरी तो हाजरी अँड़ी है
बिना कहां कह जावो हो ।



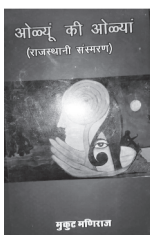


मंजू किशोर 'रश्मि'

ओळ्यां को खाटो-मीठो संसार : ओळ्यां री ओळ्यां

‘ओळ्यां की ओळ्यां’ पोथी को नीलै रंग को आवरण पाना हिरदै में दब्या समंदर को दरसाव दे छै। लागै छै पोथीकार मुकुट मणिराज जी जद ई पोथी नै लिखबा लाग्या तो हिरदै का समंदर को मंथन होबा लाग्यो होवैगो। जीं में सूं यां संस्मरणां का रूप में अेक सूं अेक महंगा माणक-मोती, ओसध्यां अर अनुभव का नाळा-नाळा रूप दरसाव पाठकां कै साम्हीं म्हाेल्या छै, जो जीवण नै जीवंत रहबा की सीख दे छै। अर जे मंथन करतां ज्हेर कढ्यो छै ऊंनै वै खुद ई गटक्या। पण फेर ई पाठकां कै कारणै सीख की लेरां संभळबा अर हुसियार होबा लेखै नीलकंठ-सो दरसाव दे छै।

लेखक मुकुट मणिराज संस्मरण पोथी सूं खुद का जीवण को ई दरसाव न दे, गांव का लोकजीवण, ढबढाळ अर संस्कृति नै हांसता-बोलता साम्हीं मेलै छै। बतावै छै के मिनख नै कस्यां दोगला लोगदणी अर परिस्थितियां सूं बचणी चाईजै। पोथी नै पढतां थकां ये अनुभव होया। पोथी में अस्या घणा नूवा-नूवा सबदां सूं परिचै होयो जे अब लगभग लोक जुबान सूं उगटग्या। न सुणबा में मलै न बोलबा में। मतलब जनमानस अर पाठक या समझ सकै कै पोथीकार कै चारखूंट चोरासी का परिवेस सूं कढता, डोलतां अर रमतां थकां समाज सूं भेळा कर्या अनुभव समय का भाटा कै नीचै दबग्या छ। वांनै आज कलम रूपी छीणी सूं घड़'र 'ओळ्यां की ओळ्यां' का रूप में पाठकां कै साम्हीं राख्या छै। पोथीकार की या विसेसता री छी कै आपणी यादां नै पाठक सूं जोड़'र वांका हिरदै में गहराई सूं उतारै छै। पोथीकार नै समाज में यो संदेस देबा की कोसिस करी छै कै ज्यां पुराणी बगत नै याद कर'र दुखी होवां, पण बगत बदळ्यां पाछै काई पण नीं हो सकै तो अब ज्यां घड़्यां में हांस सकां वां घड़्यां में रोवा क्यूं? संकल्पां



:: टिकाणो ::
वी.एच.ई.-119,
चावला सर्किलरै कनै
विवेकानंद नगर
कोटा (राज.) 324005
मो. 8441019846

अर विकल्पां की भीतरी लड़ाई सूं चालै छै जिंदगाणी की गाड्यां तो हमेस सूं ई। मणिराज जी अपणा जीवन का अनुभवां अर दिसाबोध मारगदरसण सूं पाठक जगत कै भीतर आसावादी चेतना जगावै छै।

पोथी को पैलो संस्मरण छै—‘बूढो डोकरो होज्यो’। बाळपणा में घणी बार बाळक नासमझी में बडा-बूढां का अमकता हिरदै का भाव सूं अणजाण रहै छै। वांकी सीख अर सलाह सूं चिड़ जावै छै। अणसमझ्यां में मन दुखा ले छै। जद बडा होवै तो अँसास होवै छै कै बाळपणा में जीवण में परोक्ष अर अपरोक्ष रूप सूं गलती हो जावै छै, जीनै ईमानदारी सूं स्वीकारै छै, अर आज हेरै छै कै कोई तो होवै माथा हाथ फेर ‘र कहबा हाळो कै ‘बूढो डोकरो होज्यो’ अर मन-ई-मन मुस्करावै छै नादानी पै। ई संस्मरण कै टाळ ‘नंगा-पदंगा’ अर ‘कुण छै भाभा’ ये अस्याई संस्मरण छै।

संदा संस्मरणां में गांव की बोली-चाली, जात-पांत, रहन-सहन, ऊंच-नीच, खेतीबाड़ी, ढांडा-ढोर, नदी-नाळा, कुआं-बावड़ी, डूंगर-दरड़ा अर विविधता की संस्कृति आद सारी बातां छै यां संस्मरणां में। बाळक कतना अबोध होवै छै। वै आसानी सूं समझ न पावै। बडा मनख्यां की उलझाड़ भरी बातां। ‘बाट’ संस्मरण बतावै छै कै मां कतनी ई गरीब होवै, दुखी होवै पण अपणी औलाद को छणीस्योक ई दुख न देख पावै। वा आपणी संदी परेसानी भूल ‘र बाळक का सुख की सोचै छै। लेखक की मां देखै छै कै बेटो भरी दुपहरी में 8 किलोमीटर दूर पगां-पगां स्कूल जावै छै, तो मजदूरी कर ‘र अर थोड़ा-घणा घट्या जे पीसा सहैर में रहबा हाळी पछाण की बहन सूं उधार लेय ‘र बेटा कै नूवी साइकिल लेय ‘र आवै छै।

संस्मरण ‘दो रुपियां कै साटै’ गुरु अर शिष्य को प्रेम अर विस्वास को रिस्तो छै। गुरु ई बाळक का छुप्या गुणां नै निखारै छै। लेखक गुरुजी नै तो अस्यो वैवार कस्यो कै लेखक की जान पै आण बीती। पीसो असी चीज छै कै सारा रिस्ता बेकार हो जावै छै। कदी-कदी गुरुजी ई भूल जावै छै अपणा कर्तव्य अर रकाण। अर जस्यां लेखक नै मानसिक तनाव अर परेसानी झेली, यो संस्मरण सीख दे छै। वस्यां आज ई घणा बाळकां नै परेसानी आवै तो पोथीकार कहबो चावै छै कै गुरुजी नै ई समझणी चाईजै अर बाळकां नै भी। अस्यां ई ‘शेखी उतरगी’ संस्मरण सीख दे छै कै अणजाणी जगह पै टैम-बेटैम सोच-विचार ‘र जाणो चाईजै अर बडां की सलाह लेणी चाईजै, न तो सब उल्टा-पुल्टा हो जावै छै अर परेसानी सूं दो-दो हाथ करणा पड़ जावै छै।

अगलो संस्मरण ‘कुण करै अर कुण भरै’ सीख दे छै कै कदी गलत की संगत न करणी चाईजै। नीं तो निर्दोस होतां सतां ई सजा का हकदार हो सको छो। ‘मंसा डाकण, संका भूत’ संस्मरण में पोथीकार बताबो चावै छै कै यू भूत-प्रेत काई नीं होवै। पुराणा जमाना में वस्यां ई मन बहलाबा कै कारण लोग गपोड़ा भरी कहाण्यां गढ लै छ अर

लोगां नै डरपाता रहै छ। पोथीकार बाळपणा में सुणी असी बातां नै, ई घटना का माध्यम सून कारै छै अर यो संदेस दे छै कै भूत-प्रेत न होवै बल्कि इंसान की 'मंसा डाकण अर संका भूत' होवै छै। खाबो अर पहरबो दो चीजां को मनख्यां कै छुछ (चस्को) होबू कारै छै। पुराणा बगत सून लेय 'र आज ताई जीमबो यानै स्वादिष्ट व्यंजन खाबो कुण नै चोखो न लागै। गांवां में जीमबा को नूतो आ जातो तो हरेक मिनख कै जीमबा को छुछ बंध जातो। ई संस्मरण में लेखक नै बौत ई रोचक वरणन कस्यो छै। संस्मरण पढतां-पढतां मूंडा में पाणी आ जावै छै।

अस्यां ई 'नायां की बरात में' संस्मरण में पोथीकार नै ऊं बगत अणजाण्या पांवणा की ई घणा मान-सम्मान सून मनुवार होवै छी। 'वै तीन दिन' संस्मरण दरसावै छै कै मिनख की गरीबी अर मजबूरी काई होवै छै। कदी-कदी समै अस्यो आवै छै कै कोई साथ न दे। मिनखजूण कतनी कठिन समै सून गुजरै छै। कठिनाई भस्या जीवन को जीवतो-जागतो उदाहरण छै। वस्यां ई समै कदी अेक सो न रहै, या बताबा की कोसिस करी छै संस्मरण 'बगत बडो बलवान' में। समै की ऊंची-नीची घाट्यां चढतां-उतरतां लगन सून दिन-रात मेहनत करो तो समय ई साथ दे छै। पोथीकार बतावै छै कै अेक दिन जीं खेत पै मजूरी करी, आज कै दिन ऊं ऊंको मालिक बणग्यो।

पोथीकार कवि ई छै। 'कवि-सम्मेलन को चाव, दो घटनावां' ई बडी दिलचस्प छै। नया कवि कै कवि-सम्मेलन में जाबा अर कविता सुणाबा की घणी हूस रहै छै। पण संपर्क साधन का अभाव में कवि नै कितनी अबखायां भुगतणी पड़ै छै, लेखक नै घटनावां को जीवत वरणन कस्यो छै। हंस में हुस्याराई नीं करणी चाईजै। 'बात को बतंगड़' में पोथीकार बताबो चावै छै कै कस्यां 'बात चालै बारह कोस अर फांगो चालै अठारह कोस' वस्यां ये बातां अेक-दूजा का मूंडै चालतां-चालतां अरथ को अनरथ ई कर दे छै। 'अफसर' संस्मरण में ऊंचा पदां पै पूयां पाछै घणा मिनख सारो हार-बैवार भूल जावै छै अर छोटा करमचार्यां कै ताई अपणा नौकर समझबा लाग जावै छै अर बिना गलती कै अपमान करबा में अपणो बडापणो समझै छै।

'हवन करतां हाथ बळ्या' संस्मरण में आछी करतां बुरी होबा को संदेस छै। अेक बार सरकार नै अध्यापकां कै ताई ग्रामसेवक बना दिया छ। लेखक जी कै ताई भी ग्राम पंचायत में ग्रामसेवक कोचार्च दे दियो। मास्टर जी सीधा-सादा, यानै पंचायत में घणो काम करा दियो, पण जेईएन अर बीडिओ कमीशन का चक्कर में सारो काम गलत बता 'र निर्माण कार्य पास करबा सून इनकार कर दियो। नतीजो यो होयो कै अध्यापक जी नै मानसिक तनाव अर परेसानी झेलणी पड़ी अर अधिकारियां का चक्कर काटना पड़्य। पीसा कोड़ी गांठ सून लगा बैठ्य। नटां पिंड छूट्यो। अस्यां ई अेक बार फंसग्या शिक्षक संघ की नेतागिरी करबा का चक्कर में लेखक जी नै जेळ जाणो पड़्यो। जेळ की अेक रात

घणी अबखी बीती। संस्मरण ‘जेळ की अेक रात’ पाठकां नै बडो सबक दे छै अर अपराध सूं बचबा की सलाह दे छै। लेखक नै जेळ में काटी रात को बौत ई मार्मिक वरणन कर्यो छै।

जस्यां जीवन में बुरा अनुभव होवै छै, वस्यां ई आछ्या भी होवै छै। ‘साचा गुरु की सीख’ अस्यो ई संस्मरण छै। जिंदगी में अच्छा गुरु मिल जावै तो बाळकां को जीवन सुधर जावै छै। मोट्यार होता बाळक-बाळिकावां कै ताई सही दिसा दिखा दै तो वै जीवन में कदी न भटकै। यो संस्मरण साची सीख देंवतो अर बडा मिनखां का बडापणा की साख भरतो लागै छै। इंसान अपणै आचरण सूं बडो होवै छै। बडां की डांट छोटां की भलाई कै लेखै होवै छै। म्हानै बडां की सीख पल्ला कै बांध राखणी चाईजै। पोथी का सारा का सारा संस्मरण जीवंत लागै छै। कोई पण संस्मरण झूठ, साच अर झाँई-झप्पा जस्यो न लागै। पाठकां नै पोथी पढता थकां गांवां की ऊंढाई में उतरबा को अनुभव मिलैगो। पढतां थकां साच्याई पाठकां नै लागैगो जाणै संस्मरणां की सारी की सारी घटनावां वांका ई जीवन में घटी होवै या आपणा ई आस-पाड़ोस अर यार भाईलां की लारै घटी होवै। संस्मरणां में आई सटीक कहावतां भासा की रोचकता में च्यार चांद लगावै छै। मुकुट मणिराज अेक समर्थ लेखक छै। ग्रामीण जीवन को लंबो अनुभव छै, ई लेखै वांकी रचनावां में ग्राम्यता मूँडै बोले छै।

पोथी का आवरण में डॉ. ओम नागर का पोथीकार का कृतित्व, व्यक्तित्व अर संस्मरण पै वांका विचार छै। वै कह छै कै “जे आपणी रचनावां में जगती को उजास रचै छै। सबदां को उजास, मिनखपणा को उजास। यो उजास ई तो जुगां सूं मिनखाचार की गेल ऊजळ कर्यो छै। अपना सबदां सूं मिनखपणा की गेल सेंचदन कर र्यो छै अग्रज कवि मुकुट मणिराज।”

संस्मरणां में लोक संस्कृति अर बोलचाल की भासा पाठकां नै आकर्षित करैगी। जी में केई देसी सबद काम में ल्यो छै। अस्यां ई पोथीकार नै भासा ई रोचक बणाबा के लेखै मुहावरा अर लोकोक्तियां को उपयोग भी अतनो सटीक कर्यो छै जाणै बातां अर वाक्य यांकै बना पूरा हो ई न पाता। जस्यां ‘कात्यो-कूत्यो पाछो कपास होबो’, ‘खुराड्या भूँटा अर खैजड़ा चीठा’ ये रोजमर्रा की बोलचाल में गांव का लोग दणी में उपयोग ले छै। कुल मिला ‘र पोथी ‘ओळ्यूं की ओळ्यां’ गिणाबा अर चरचा करबा जोग छै, जे पाठकां नै घणी रुचैगी। संस्मरणकार कै ताई मोकळी बधायां।



पोथी : ओळ्यूं की ओळ्यां/ विधा : संस्मरण / लेखक : मुकुट मणिराज

संस्करण : 2023 / प्रकाशक : काव्यांजलि पब्लिकेशन, कोटा



राजस्थली रै
सम्पादक मण्डल
रा साथी
भाषाविद्
कहाणीकार
डॉ. मदन सैनी
नै
प्रयास संस्थान
चूरू रो
बैजनाथ कथा
साहित्य
पुरस्कार अरपित
करता अतिथि ।

राजस्थली री
प्रकाशक संस्था
रा प्रबंध समिति
रा सदस्य
कवि
कथाकार
श्री सत्यदीप
नै
वाराणसी में
अन्तर्राष्ट्रीय काशी
विश्वनाथ साहित्य
शिरोमणि
सम्मान अरपित
करता अतिथि ।



राजस्थली रै
सम्पादक मण्डल
सूं जुड़ी
कवयित्री
मोनिका गौड़
नै
कोलकाता री
संस्थान
विचार मंच
कानी सूं
एक लाख रिपिया रो
'कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य सम्मान'
अरपित करीज्यो ।



जगत मायड़ भासा दिन रै मौकै मरुभूमि शोध संस्थान कानी सू 'लोक सू लाईक ताई : राजस्थानी' विसै माथै ग्यान गोठ राखीजी । इण मौकै राजस्थानी साहित्य सिरजण सारु डॉ. तेजसिंह जोधा, डॉ. कृष्णा कुमारी, श्री पूर्ण शर्मा 'पूर्ण' अर श्रीमती प्रेम नै सम्मानित करीज्या ।



राजस्थान दिवस रै मौकै 'शौर्य, स्वाभिमान अर संस्कारां री धरती : राजस्थान' विसै माथै संस्कृति भवन में आयोजित ग्यान गोठ में विचार राखता डॉ. गौरव बिस्सा अर मंच माथै विराज्योड़ा अतिथि ।

महावीर माली, मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीङ्गारगढ़)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीङ्गारगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :

खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीङ्गारगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : <http://rbhpsdungargarh.com>